इतिहास से सीधा साक्षात्कार

गोपाल शर्मा के समाचार

रामजन्मभूमि की मुक्ति के महत्वपूर्ण संघर्ष के समय सच्चाई को आम जन तक पहुंचाने और जनमानस को जागरूक करने में एक पत्रकार के रूप में गोपाल शर्मा की भूमिका अविस्मरणीय रहेगी।

– अशोक सिंघल

(बिड़ला ऑडिटोरियम, जयपुर में सार्वजनिक सम्मान के अवसर पर)

2 नवम्बर, 1990.. अयोध्या के शास्त्री नगर में कारसेवकों पर बर्बर अत्याचार

अयोध्या में आज फिर कार सेवा होगीःअत्या...

गोमती एक्सप्रेस पर हमले के बाद अलीगढ़ सेना के हवाले

सोमयज्ञ समय से छह घंटे पूर्व समाप्त

अशोक सिंघल व महंत नृत्यगोपाल दास भूमिगत

हजारों कार सेवक अभी अयोध्या में ही डटे हुए

अयोध्या के मुसलमानों में कोई भय नहीं

अर्द्ध सैनिक बलों की कम्पनियां अयोध्या पहुंचने का तांता

आज फिर कार सेवाः सरयू में तीन शव मिले

केन्द्र व राज्य सरकार की सहमति से विवादित ढांचे के नीचे उत्खनन शुरू

विवादित ढांचा जर्जर, टूट-फूट की भी मरम्मत न...

[कार्यालय संवाददाता]

अयोध्या, 24 जुलाई। रामजन्म भूमि-बाबरी मस्जिद का विवादित ढांचा जर्जर अवस्था में है। इसकी किसी भी टूट-फूट की मरम्मत नहीं करवाई जाती। ...

टीवी, अग्निशमन यंत्रों और आधुनिक अस्त्रों की मदद से इसकी सुरक्षा के लिए चौबीसों घंटे सजग रहते हैं।

इस समय करीब 20-25 हजार श्रद्धालु रोज रामलला के दर्शन करने आ रहे हैं। ...

अयोध्या में युद्ध जैसी मोर्चाबंदी

शिलान्यास स्थल से मूर्ति हटाने के विरोध में पूर्वी उ.प्र. में कई जगह बंद

...ध्या का आम मुसलमान फिर ...स्जिद बनाने के पक्ष में नहीं

उ.प्र. के कुछ और शहरों में हालत बिगड़ी

सेना के बावजूद अलीगढ़ व कानपुर में हिंसा नहीं थमी

उत्तर प्रदेश के लोगों ने कार सेवकों के लिए हर तरह का जोखिम उठाया

राम जन्म भूमि-बाबरी मस्जिद निपटाने के लिए समिति की ...

पैंतालीस हजार कारसेवक पहुंचे, वातावरण राममय

उत्तरप्रदेश में हालात और बिगड़े, खुर्जा में भी कर्फ्यू

अयोध्या में शान्तिपूर्ण सत्याग्रह

राजस्थानी महिलाओं सहित हजारों कारसेवकों ने गिरफ्तारी दी

...योध्या में आज से श्रीराम महायज्ञ

अदालत के आदेश के बावजूद परिक्रमा शुरु नहीं होने से भारी रोष

अवैद्यनाथ, चिन्मयानंद, डालमि...

राज्य सरकार के विरोध के बावजूद अर्द्धसैनिकों का फैजाबाद आना जा...

— गोपाल शर्मा —

अयोध्या, 29 नवम्बर। केन्द्र सरकार ने अयोध्या में किसी भी स्थिति से निपटने के लिए बनाई आपात योजना की तैयारियों को अंतिम रूप दे दिया है। चौदह हजार से अधिक अर्द्ध सैनिक फैजाबाद पहुंच गए हैं और उनके वरिष्ठ अधिकारी हालात पर नजर रखे हुए हैं। उधर अर्द्ध सैनिकों की उपस्थिति को लेकर राज्य सरकार असमंजस की स्थिति में है वह किसी भी तरह के टकराव से बच रही है। उच्च पदस्थ सूत्रों ने बताया कि राज्य सरकार के कड़े विरोध के बावजूद केन्द्र ने अर्द्ध सैनिकों का आना जारी है। केन्द्र सरकार ने अर्द्ध सैनिकों की संख्या और उन्हें फैजाबाद भेजने के बारे में भी अपनी ओर से कोई सूचना राज्य सरकार को नहीं दी। राज्य के महानिदेशक तक को इसके बारे में कोई पुख्ता जानकारी नहीं। राज्य सरकार गुप्तचर विभाग के ...

धैर्य, साहस, कर्मनिष्ठा

1990 में जब राम मंदिर निर्माण के आंदोलन ने जोर पकड़ा तो अयोध्या उसका केंद्र बन गया। मुझे उस समय न जाने क्यों लगा कि श्री गोपाल शर्मा को अयोध्या में जाकर पड़ाव लगा देना चाहिए। उनको भी यह बात अच्छी लगी। अयोध्या में हालात उस समय ऐसे थे कि किसी पत्रकार का रहना तो दूर, वहां घुसना भी संभव नहीं था। वे लखनऊ के एक होटल में रहे और वहीं से रोज अयोध्या आते–जाते रहे।

श्री गोपाल शर्मा को अयोध्या जाने की प्रेरणा देने की पृष्ठभूमि भी यह थी कि वे श्री लालकृष्ण आडवाणी की रथयात्रा के समाचार संकलन से जुड़े हुए थे। इस संदर्भ में यह सोचा गया कि उनका संपर्क राम मंदिर आंदोलन के कर्णधारों से बना हुआ है, जिसके फलस्वरूप उनको विश्वसनीय समाचार प्राप्त होते रहेंगे। श्री गोपाल शर्मा की कर्मनिष्ठा से मैं भलीभांति परिचित था। वे विषम परिस्थिति में भी अपने कर्तव्य में शिथिल या विमुख नहीं होते। 1990 में उत्तर प्रदेश में मुलायम सिंह के शासन में अयोध्या में जो दुर्भेद्य किलेबंदी की गई थी और बल प्रयोग हुआ था, उस माहौल में गोलियों की बौछार के बीच श्री गोपाल शर्मा अपने कार्य में धैर्य, साहस और निष्ठा से जुड़े हुए थे। उन्होंने वहां से जो समाचार जयपुर भेजे, अनूठे थे।

1992 में जब दूसरी बार कारसेवा का अवसर उपस्थित हुआ, तो स्वाभाविक ही था कि श्री गोपाल शर्मा ही उस मोर्चे पर जाते। इस बार इतनी सुविधा अवश्य थी कि अयोध्या में वैसी नाकेबंदी नहीं थी। वे फैजाबाद में ही एक होटल में रहते हुए समाचार संकलन एवं प्रेषण करने के लिए अयोध्या और फैजाबाद के बीच आते–जाते रहे। अयोध्या नगर की स्थानीय पहचान और अपने निजी संबंधों के कारण वे फोटो भी ऐसी ले आए, जो कितने ही फोटोग्राफरों के लिए संभव नहीं थे। वे उग्र कारसेवकों की मार से भी बच गए। इस बार भी उन्होंने जो समाचार राजस्थान पत्रिका को चित्रों के साथ भेजे, वे घटनाओं की विस्तृत जानकारी देने वाले थे।

– कर्पूरचंद कुलिश

('कारसेवा से कारसेवा तक' की भूमिका)

मुख्यमंत्री श्री भैरोंसिंह शेखावत के सान्निध्य में मंत्रिमंडल सदस्यों और नवभारत टाइम्स के संपादक श्री राजेंद्र माथुर सहित पत्रकारों की उपस्थिति में गोपाल शर्मा के सम्मान समारोह के अवसर पर राजस्थान पत्रिका के संस्थापक श्री कर्पूरचंद कुलिश के आत्मीय क्षण।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का समर्थन

6 मार्च, 1983 को मुजफ्फरनगर की आमसभा में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह श्री प्रो. राजेंद्र सिंह (रज्जू भैया), पूर्व कार्यवाहक प्रधानमंत्री श्री गुलजारीलाल नंदा और उत्तर प्रदेश के पूर्व मंत्री श्री दाऊदयाल खन्ना ने रामजन्मभूमि मुक्ति का विषय उठाया। सरसंघचालक श्री बालासाहब देवरस ने संघ के रामजन्मभूमि मुक्ति आंदोलन को समर्थन देने की घोषणा की।

ऐतिहासिक रामशिला पूजन

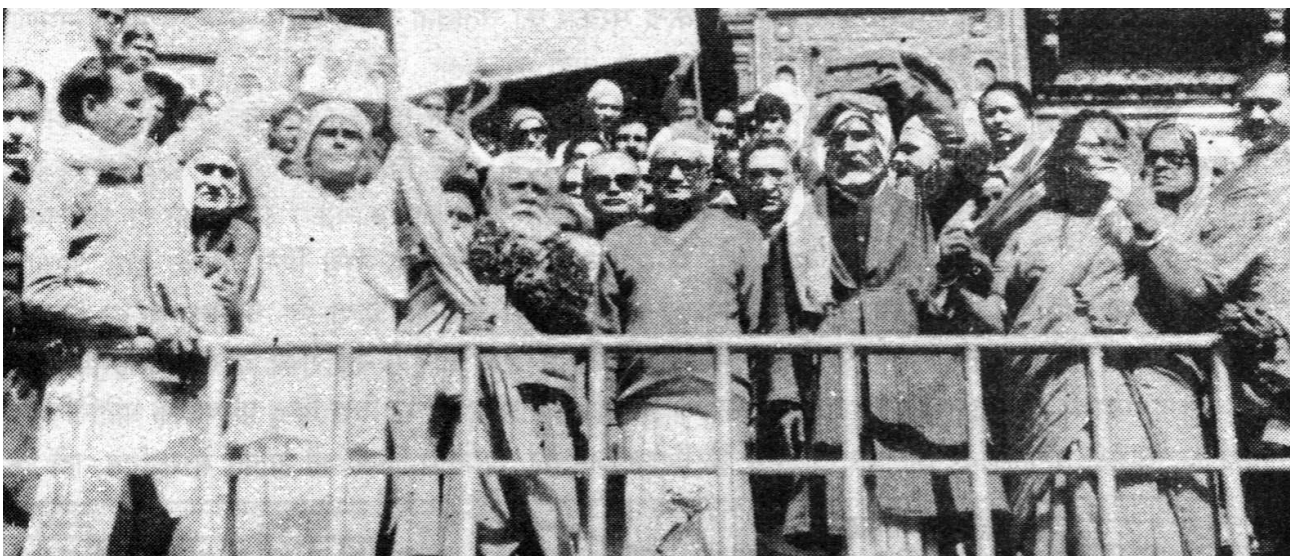

19 अगस्त, 1989.. बद्रीनाथ मंदिर में रामशिला का प्रथम पूजन.. जगद्गुरु श्री शांतानंद सरस्वती जी महाराज, भारतीय मजदूर संघ के संस्थापक श्री दत्तोपंत ठेंगड़ी, विश्व हिन्दू परिषद के महामंत्री श्री अशोक सिंघल।

रामरथ यात्रा से उपजा राममय माहौल

(सोमनाथ-समस्तीपुर राम रथयात्रा कवरेज)

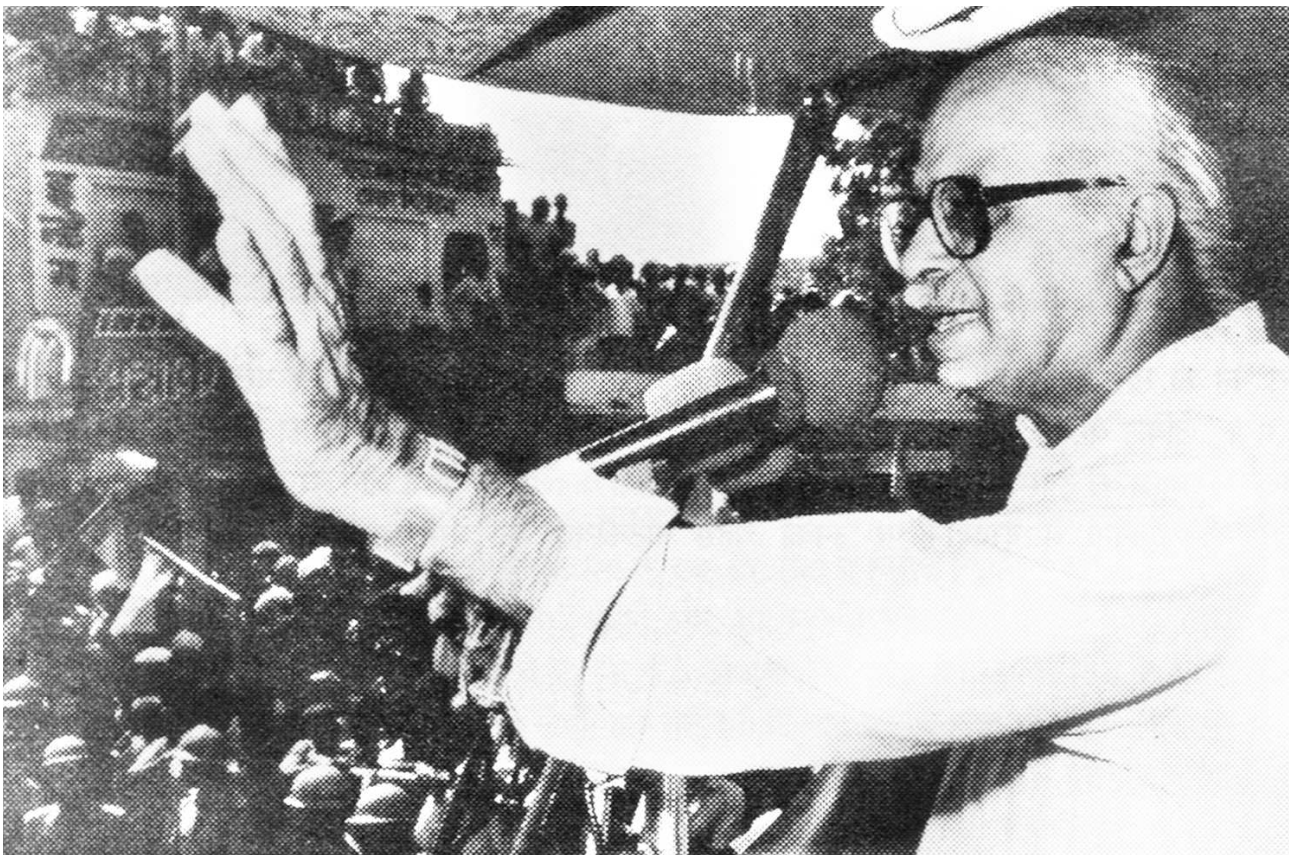

अयोध्या में रामजन्मभूमि पर मंदिर निर्माण का ज्वार बढ़ता जा रहा था। जिस स्थान से रामरथ गुजरता, वहां का संपूर्ण माहौल राममय हो उठता। जगह-जगह हजारों लोग रथ के दर्शन के लिए उमड़ रहे थे। राम के प्रति हिन्दुओं की अगाध श्रद्धा ने लालकृष्ण आडवाणी को एक राजनेता से ऊपर उठा दिया था। सोमनाथ मंदिर से चले रामरथ ने पटना तक की यात्रा के 24 दिनों में एक नए अहसास, जोश और राम के प्रति अपार श्रद्धा का अद्‌भुत उदाहरण प्रस्तुत किया। जिधर से रथ गुजरता, वहां का जैसे संपूर्ण जनजीवन आडवाणी की सभा में या रथयात्रा का स्वागत करने सड़क पर आकर ठहर जाता। लोग घंटों पहले से रामरथ के इंतजार में बैठे रहते। ज्योंही रथ वहां आता, वे खड़े होकर रथ को हाथ जोड़ते, उसका टायर या अन्य कोई हिस्सा छूकर अपने को धन्य समझते और रथ पर पुष्पवर्षा करते। ऐसे अनेक श्रद्धालु स्त्री-पुरुष देखने में आए, जो रथ के निकलने के बाद सड़क को स्पर्श कर हाथ माथे से लगा लेते।

'रघुपति राघव राजाराम', 'जय सियाराम' की धुनें वायुमंडल में गूंजती रहतीं। सब जगह एक-सी आवाज.. 'रामलला हम आएंगे, मंदिर वहीं बनाएंगे', 'बच्चा बच्चा राम का, जन्मभूमि के काम का', 'सौगंध राम की खाते हैं, मंदिर वहीं बनाएंगे'। रथयात्रा के स्वागत के लिए उमड़े नवयुवकों का जोश तो जैसे हर जगह बेकाबू हो उठता। युवक अस्त्र-शस्त्र चमकाते नजर आते, तो कुछ मंदिर निर्माण के उमड़ते जुनून में पहले से तय नारों की सीमा तोड़ देते। भीड़ में किसी कोने से नारे उछलने लगते, 'हम हिन्दू हैं अस्सी करोड़, हड्डी-पसली देंगे तोड़', 'एक धक्का और दो, मस्जिद को तोड़ दो'। हालांकि आडवाणी इन नारों पर तत्काल आपत्ति करते और युवकों को रोकते, लेकिन फिर भी युवकों को ऐसा नारा ही अधिक आकर्षित करता- 'अब तक जिसका खून न खौला खून नहीं वह पानी है, जन्मभूमि के काम न आए तो बेकार जवानी है।'

29 अक्टूबर, 1990.. अयोध्या में 'परिंदे को पर नहीं मारने देने' के लिए युद्ध-सी मोर्चाबंदी के बावजूद 20 हजार कारसेवकों के अयोध्या में होने और कारसेवा की व्यापक तैयारियों का सटीक आकलन। कारसेवा की पूर्व संध्या पर भेजी गई रिपोर्ट से पहली बार सामने आया कि अयोध्या में ठहरे कारसेवकों का मेहमानों की तरह स्वागत किया जा रहा है और वे मठों-मंदिरों तथा घरों से निकलकर रामजन्मभूमि की ओर बढ़ेंगे।

मोर्चाबन्दी के बावजूद आज कार सेवा शुरू करने की व्यापक तैयारियां

गोपाल शर्मा

अयोध्या, 29 अक्टूबर। सशस्त्र बलों की व्यूह-रचना के बावजूद हजारों कार सेवक चोरी-छिपे अयोध्या और उसके आसपास गांवों में पहुंच गए हैं। राम जन्मस्थान मन्दिर और शिलान्यास स्थल की इतनी जबर्दस्त मोर्चेबन्दी की गई है कि कोई परिंदा पर नहीं मार सकता। इसके बावजूद देवोत्थान एकादशी [30 अक्टूबर] को हजारों कार सेवक शिलान्यास स्थल, जहां से विश्व हिन्दू परिषद ने कार सेवा शुरू करने की घोषणा की है, की ओर बढ़कर सत्याग्रह करेंगे। साथ ही, पूरे प्रदेश में तनाव फैला हुआ है।

पुलिस के जबर्दस्त उत्पीड़न के बावजूद उत्तर प्रदेश में कार सेवकों का तांता लगा हुआ है। जेलों और अस्थाई जेलों में जगह खत्म हो गई है। समुचित प्रबन्ध नहीं हो पाने के कारण कार सेवक जेलों से निकल भागने में कामयाब होते जा रहे हैं तथा फिर अयोध्या की ओर बढ़ने लगते हैं।

सशस्त्र बलों ने अयोध्या के बीसों किलोमीटर दूर से ही लोगों का आना-जाना रोक दिया है। ज्यों-ज्यों अयोध्या की ओर बढ़ते हैं, सशस्त्र जवानों का घेरा बढ़ता जाता है। राम जन्मस्थान मन्दिर में जाकर तो यह घेरा व्यूह-रचना का सबसे मजबूत द्वार बन गया है। मुख्य स्थान की सुरक्षा की देखभाल केवल राजपूत पुलिस अधिकारियों पर है जो विश्वनाथ प्रतापसिंह के निकट बताए जाते हैं। तब भी कार सेवक खेतों से होकर अयोध्या के निकटवर्ती गांवों में पहुंच रहे हैं, क्योंकि सबके गले से लटकते थैलों में केवल एक जोड़ी कपड़ा होते हैं। अयोध्या के आसपास पहुंच पाने वाले कार सेवकों की उम्र ज्यादातर 18 से 30 वर्ष ही है। इन कार सेवकों ने पूर्व योजना अनुसार लोगों के घरों में शरण ले रखी है। गांव वाले बड़ी श्रद्धा से

अयोध्या पर लंका की छाया

इनके खाने-पीने का प्रबन्ध कर रहे हैं। पहले पुलिस गांवों में गश्त लगाती थी लेकिन अब उस पर भार बढ़ जाने से यह संभव नहीं रह गया है। ये कार सेवक खेतों से होकर ही आसपास के गांवों में पहुंचे हैं तथा खेतों से होकर ही सोमवार की रात या मंगलवार को भोर में अयोध्या की ओर प्रस्थान करेंगे।

अयोध्या के मठों-मन्दिरों पर लगातार छापे मारने के बाद भी अभी काफी तादाद में साधु-सन्त, परिक्रमार्थी और कार सेवक उनमें हैं। लोगों के घरों में भी चार-पांच हजार कार सेवक रह रहे हैं। एक अनुमान के अनुसार करीब 15-20 हजार कार सेवक तो अयोध्या नगरी में हैं ही। हलांकि ये कर्फ्यू लगने से पहले आए थे लेकिन कर्फ्यू लगने पर भी अयोध्यावासी इन्हें अपने मेहमान की तरह मानते हैं। खुद भले ही भूखे-प्यासे हैं लेकिन कार सेवकों की जरूर चिन्ता करते हैं। बड़ी मुश्किल से दो-चार कार सेवकों से बात हुई। वे खुद दुविधा में हैं तथा अयोध्या के लोगों का कष्ट नहीं बढ़ाना चाहते हैं लेकिन इस समय स्थिति ऐसी ही है। ये कार सेवक मंगलवार देवोत्थान एकादशी को मठों-मन्दिरों, घरों से निकल कर राम जन्मस्थान कहे जाने वाले स्थान की ओर बढ़ेंगे।

ऐसा नहीं कि स्थानीय पुलिस अधिकारी कार सेवकों के पहुंचने से अनभिज्ञ हों। शनिवार को इस संवाददाता के सामने एक पुलिस अधिकारी ने स्वीकार किया कि अनेक कार सेवक तो पेड़-पौधों, खेतों में और दूर-दूर तक जान की जोखिम लेकर छिपे हुए हैं। इन्हें सशस्त्र बल इसलिए नहीं पकड़ पा रहे हैं, क्योंकि वह स्थानीय रास्तों से अनभिज्ञ हैं।

[शेष पृष्ठ चार पर]

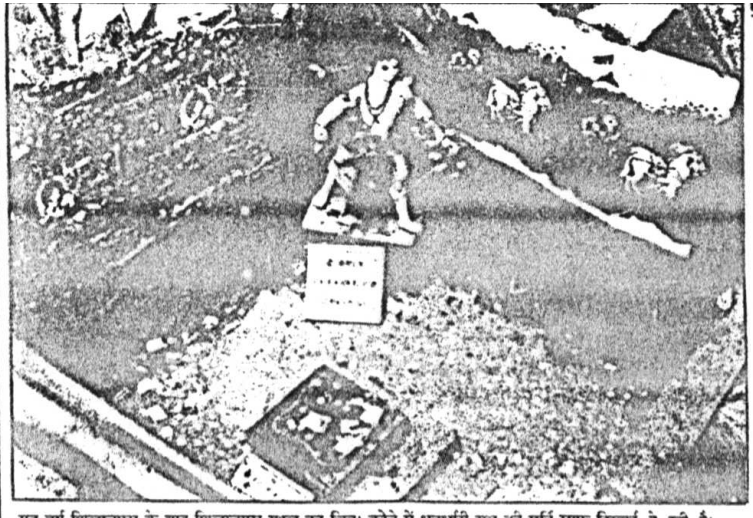

गत वर्ष शिलान्यास के बाद शिलान्यास स्थल का चित्र। कोने में धनुर्धारी राम की मूर्ति साफ दिखाई दे रही है। आज से साभार

30 अक्टूबर, 1990..
सेना और अर्धसैनिक बलों की मोर्चाबंदी को ध्वस्त करते हुए रामभक्तों ने जन्मस्थान मंदिर के ऊपर के गुंबद-से ढांचों को क्षति पहुंचाते हुए वहां भगवा झंडा फहराकर तथा शिलान्यास स्थल पर एक रामशिला रखकर कारसेवा की शुरुआत की। पुलिस ने कई स्थानों पर गोलियां चलाईं, जिससे 15 लोगों की मौत हो गई और करीब एक दर्जन लोग घायल हुए। कारसेवा का नेतृत्व कर रहे श्री अशोक सिंघल को सिर में चोट आई और तीन टांके लगे।

हाल ही लिया गया उसी स्थल का चित्र। मूर्ति नदारद है। जागरण से साभार

भगवा झंडा फहराया, रामशिला रखी

—गोपाल शर्मा—

अयोध्या, 30 अक्टूबर। सेना और अर्द्धसैनिक बलों की युद्ध-सी मोर्चेबंदी को ध्वस्त करते हुए रामभक्तों ने जन्मस्थान मंदिर के ऊपर के गुम्बद से ढांचों को क्षति पहुंचाते हुए वहां भगवा झंडा फहराकर तथा शिलान्यास स्थल पर एक रामशिला रखकर कार सेवा की शुरुआत की।

इससे पहले मंगलवार को सुबह 9 बजे के आसपास सेना, अर्द्धसैनिक बलों और उत्तर प्रदेश सशस्त्र पुलिस ने सामूहिक रूप से गोली चलाने से इंकार कर दिया। लेकिन भारत-तिब्बत सीमा पुलिस के दो- तीन जवानों तथा दो-चार अन्य जवानों ने वेद मंदिर, नया घाट, सरयू घाट और हनुमानगढ़ी- जन्मस्थान मंदिर के बीच में छिटपुट रूप से गोलियां चलाईं। गोलियों से मृत तीन जनों के शव अयोध्या अस्पताल में देखे गए लेकिन बाद में उन्हें जनता ही उठा कर ले गई। पुलिस की ट्रक से धक्का लगने पर हरियाणा का एक जवान ओमप्रकाश यादव घटनास्थल पर ही मर गया।

पुलिस की गोलियों से करीब एक दर्जन लोग घायल हो गए हैं। कारसेवा का नेतृत्व कर रहे विश्व हिन्दू परिषद के महामंत्री अशोक सिंघल घायल हो गए। अयोध्या अस्पताल में उनके सिर में बाईं तरफ तीन टांके लगाए गए हैं। मृतक कार सेवकों में एक का नाम रमेश कुमार वाजपेयी है।

एक प्रत्यक्षदर्शी पत्रकार के अनुसार अयोध्या में पुलिस की गोलियों, लाठी प्रहार व आंसू गैस से जहां पन्द्रह लोगों के मरने का समाचार है वहीं विश्व हिन्दू परिषद के लोगों ने मृतकों की संख्या ग्यारह बताई है। जिला प्रशासन ने केवल पांच जनों के मरने की पुष्टि की है। घायलों में तेरह गंभीर हालात में फैजाबाद के जिला अस्पताल में भर्ती हैं।

अयोध्या में कार सेवा शुरू

सुबह पांच बजे के बाद ही सरयूपुल पार करके अयोध्या के तीन ओर के खेतों से तथा सड़क मार्ग से हजारों लोग अयोध्या पहुंचने शुरू हो गए थे। पुलिस की सारी मोर्चेबंदी ध्वस्त हो गई। जन्मस्थान मंदिर के बाहर लगाए इस्पात के बैरियर और सींखचों के अलावा सारे अवरोध 'जय श्रीराम' के गगनभेदी नारे लगाती जनता ने तोड़ दिए। लोग दीवार और [illegible] पहुंच गए। कई कारसेवक आदमी पर आदमी [illegible] गुम्बदों के ढांचों पर चढ़ गए। गुम्बदों के ऊपर बनी गोल नक्काशी तोड़ डाली। जन्मस्थान के सामने की दीवार दो-तीन जगह से तोड़ डाली। गोली चलाने से इंकार कर देने वाले सशस्त्र बलों ने हाथ जोड़-जोड़कर और कुछ ने 7.62 एम.एम. की सेमी आटोमेटिक राइफलों और स्टेनगनों से धक्के मारकर किसी तरह कार सेवकों को जन्मस्थान से बाहर किया। ये पंक्तियां लिखने तक सशस्त्र बल जन्मस्थान के चारों ओर गुम्बद पर हथियार ताने खड़ा है तथा करीब एक लाख लोग रामजन्मस्थान मंदिर के बाहर चारों ओर सौगंध राम की खाते हैं मंदिर यहीं बनाएंगे' के गगनभेदी नारे लगा रहे हैं। इनमें साधु, संत, बच्चे वृद्ध महिलाएं तक शामिल हैं।

अयोध्या में खुशियां मनाई जा रही है। कर्फ्यू होते हुए भी नहीं रहा गया है। पूरी सड़कों पर रामभक्त ही रामभक्त 'जयश्री राम', 'अयोध्या हुई हमारी है अब

पुलिस की गोली से 15 मरे

मथुरा की बारी है' के नारे लगाते घूम रहे हैं। एक दूसरे की ओर नजर मिलते ही लोग जै सियाराम रामचन्द्र की जय बोलने लगते हैं। अयोध्या की सारी दुकानें खुल गई हैं। मिठाई के दुकानदारों ने प्रसाद के रूप में मिठाई बांटनी शुरू कर दी है। औरतें, बूढ़े, बच्चों, अपाहिज सब जन्मस्थान की ओर बढ़ रहे हैं। घरों में रहने वाली महिलाएं घर में जो भी गुड़, लड्डू, चीनी या दूसरे किसी भी तरह की मिठाई थी वह लेकर सड़क पर निकल आई हैं और बांट रही हैं। **बच्चे आग्रह कर-करके पानी पिला रहे हैं। कुछ वृद्धा महिलाएं तीन- चार जगह इकट्ठी होकर बधाइयां और बलिहारी गा रही हैं। अयोध्यावासियों के चेहरे पर भावविह्वलता और हर्षोल्लास का भाव है तथा वे लोगों को जन्मस्थान की ओर बढ़ने को प्रोत्साहित कर रहे हैं अनेक लोग गैंती, फावड़ा, कुल्हाड़ी छैनी, हथौड़ा और दीवार तोड़ने के दूसरे औजार** लेकर जन्मस्थान मंदिर की ओर बढ़ रहे हैं।

जो पुलिसकर्मी और [illegible] आतंक का प्रयाय बने हुए थे तथा जिनमें से कुछ [illegible] गोलियां भी चलाई हैं वे आदर का पात्र बने हुए हैं। अनेक पुलिसकर्मी लोगों के घरों में जाकर चाय नाश्ता कर रहे हैं तो लगभग सभी बधाई ले-देकर एक दूसरे के साझीदार बने हुए हैं। कई नौजवान कार सेवक बड़ी उम्र के पुलिसकर्मियों को श्रद्धा से हाथ जोड़ रहे हैं तथा पुलिसकर्मी भी लोगों से हाथ मिला रहे हैं। दोपहर दो बजे दूरदर्शन से खबर आई तो एक घर में बीसों केन्द्रीय रिजर्व पुलिस के जवान खबर सुन रहे थे। शुरू में ही जब समाचार आया कि स्थिति तनावपूर्ण लेकिन नियंत्रण में है तथा कार सेवकों [illegible]

खून से लथपथ रामगली.. गोलियों के बीच

पुलिस के जवान पीछे से राजमंदिर की छत पर चढ़े और कुछ गोलियां चलाईं। मैं अपना पहचान पत्र लिए हाथ ऊपर करके कवरेज में लगा हुआ था।

2 नवम्बर, 1990.. कार्तिक पूर्णिमा.. अयोध्या नगरी निहत्थे और अहिंसक कारसेवकों के लहू से नहा उठी। इस काले अध्याय की शुरुआत दिगम्बर अखाड़े से हुई। सुबह साढ़े नौ–दस बजे दिगम्बर अखाड़े से निकलकर कारसेवकों ने दाईं ओर की गली से मुख्य सड़क की ओर प्रस्थान किया, जिसे पार करके हनुमानगढ़ी होकर जन्मभूमि पहुंचने का कारसेवकों का लक्ष्य था। 80 वर्षीय परमहंस रामचन्द्र दास अपने दो अंगरक्षकों के साथ जीप पर बैठकर निकले। लेकिन अखाड़े के बाहर सशस्त्र बलों ने ऊंची छतों पर खड़े होकर निशाने साध रखे थे। पहले से सारा सोचा–समझा 'आपरेशन कारसेवक'। अयोध्या शोध संस्थान, राजमंदिर और आसपास की ऊंची इमारतों पर खड़े जवानों ने सड़क की तरफ बढ़ते कारसेवकों पर संकरी गली आते ही गोलियों की बरसात कर दी। गोलियां खाए कारसेवक 'जय श्री राम–जय श्रीराम' कहते–कहते गिरने लगे। चार–पांच शव तो वहां देखे गए थे; बाकी शव पुलिस उठा ले गई, जिनका पता नहीं चला। किसी कारसेवक ने पीठ में गोली नहीं खाई, न किसी ने राम–नाम का उच्चारण तब तक छोड़ा जब तक सांस रही। सड़क पर जहां बलिदानी रामभक्त गिरे, वहां से ठीक बगल की इमारत लालकोठी काफी देर तक राम की नगरी के रक्तरंजित होने की मूक साक्षी बनी रही।

रामगली में मृत पड़े कारसेवक रामकुमार कोठारी का शव

गोलियों की इस बरसात के बाद भी काफी कारसेवक आगे की गली में प्रवेश कर चुके थे। यहां फिर बर्बरता का नंगा नाच हुआ। गोलियों से बचने के लिए कारसेवक मकानों में छिप गए तो दरवाजे तोड़–तोड़ कर उन्हें निकाला गया और निशाना लगाकर गोली मार दी गई। कमलनयन शास्त्री के मकान में चार–पांच कारसेवक छिपे थे। इन सभी को दरवाजा तोड़कर निकाला गया और गोली मार दी गई। यहीं पर थे बीकानेर के प्रवासी राजस्थानी भाई रामकुमार कोठारी और शरद कोठारी। वे अपने दो और चचेरे भाईयों के साथ कारसेवा में आए थे। शास्त्री के मकान से पुलिस वालों ने रामकुमार कोठारी को बाहर निकाला और सिर में गोली मार दी। सगा भाई शरद यह दृश्य देख नहीं पाया। भ्रातृत्व और अपनत्व से ओतप्रोत होकर गोलियों की परवाह किए बिना अपने भाई के ऊपर जा गिरा, लेकिन उसे भी गोली मार दी गई। मथानिया के सेठाराम, जोधपुर के प्रो. महेन्द्रनाथ अरोड़ा, तब गोलियों के शिकार हो गए थे जब दिल्ली के कार्यकर्ता इस गोली वर्षा के कारण पीछे हो गए और राजस्थान की वीर प्रसूता धरती के कारसेवकों ने जन्मभूमि की ओर कदम बढ़ाना जारी रखा।

मैं रामजन्मभूमि की ओर बढ़ा। वहां जाने की इजाजत नहीं मिली। कुछ ही मिनटों में एक युवक हनुमानगढ़ी के ठीक सामने राजमंदिर की छत पर ले गया। ददुआ राजा द्वारा बनवाए गए इस मंदिर की छत पर खड़े होकर मैं शास्त्री नगर की गली को देख रहा था। शास्त्रीनगर पर रामधुन करते हजारों कारसेवकों का दल दोपहर एक बजे तक धीरे–धीरे आगे बढ़ने की कोशिश कर रहा था। यह दल कोतवाली के एक तरफ था। बीच में दो बैरियर लगे थे। दूसरी ओर एक दल और था, जो आगे बढ़ने की कोशिश कर रहा था। तभी दोनों बैरियर टूट गए और दोनों ओर के कारसेवकों की भीड़ एक हो गई। यही क्षण था जब हवा में गोलियां चलनी शुरू हुईं। साथ ही, अश्रुगैस के गोले और निर्मम लाठीचार्ज शुरू हुआ। फैजाबाद की ओर खड़े दल के कारसेवक गलियों में खदेड़ दिए गए जबकि सरयू घाट वाले दल के आगे खड़े कारसेवक बल प्रयोग से पीछे मुड़े, लेकिन ज्यादातर दक्षिण भारतीय कारसेवकों के इस दल ने तत्काल फैसला किया कि कोई पीछे नहीं मुड़ेगा। आगे के सैकड़ों कारसेवक रामधुन करते हाथ लम्बे करते हुए दण्डवत प्रणाम की मुद्रा में लेट गए। रामधुन करते लेटे कारसेवकों पर भी बर्बरता करने से पुलिस नहीं चूकी। उन्हें डंडों से, बंदूको के कुन्दों से, बूटों से कुचला गया और उन पर घोड़े दौड़ाए गए। कई सौ कारसेवक बुरी तरह जख्मी हुए। फिर भी किसी ने पीठ नहीं दिखाई। घायल 'जय श्री राम' 'जय श्री राम' कह रहे थे। उमा भारती को घसीटकर अमानवीय और निर्ममतापूर्वक गिरफ्तार किया गया। कारसेवक नहीं हटे। पुलिस ने फिर गलियों से निकलकर कारसेवकों को छोटे–छोटे हिस्सों में विभाजित किया और लाठियों से मार–मार कर गलियों में खदेड़ा।

अयोध्या में निहत्थे कार सेवकों पर बर्बर जुल्म:गोलियों से दर्जनों ढेर

गोपाल शर्मा

अयोध्या, 2 नवम्बर। भगवान राम की जन्म स्थली व राजधानी अयोध्या में कार्तिक पूर्णिमा के पवित्र दिन बर्बर जुल्म का काला अध्याय रचा गया। जय सियाराम- जय सियाराम की रामधुन करते जन्मभूमि मंदिर की ओर बढ़ते निहत्थे और पूर्णतया अहिंसक कारसेवकों पर अर्द्धसैनिक बलों की कुछ टोलियों ने योजनाबद्ध ... से गोलियां चलाईं, लाठि... कई दर्जन कारसेवक मारे गए और सैकड़ों घायल ... मंदिर तक पहुंचे।

बिजनौर में 15 शव और मिले

नई दिल्ली, 3 नवम्बर [यू.एन.भाषा]। मंगलवार से अयोध्या की घटनाओं के बाद हिंसाग्रस्त विभिन्न राज्यों में शनिवार को हालांकि स्थिति आमतौर पर शांतिपूर्ण रही लेकिन कई स्थानों पर अभी कर्फ्यू लगा हुआ है। हिंसा की वारदातों में अब तक दो सौ 35 लोगों की मृत्यु हो चुकी है।

कल देर रात को हुई हिंसक घटनाओं में कर्नाटक में दो जनों की मृत्यु हो गई। बिहार में तीन शव और मिले हैं। आंध्रप्रदेश में कल रात एक और व्यक्ति के मरने की सूचना आज प्राप्त हुई। इसके साथ ही मंगलवार को भड़की हिंसा के बाद से अब तक मृतकों की संख्या 235 हो गई है।

उत्तरप्रदेश में आज 27 शव और मिले। इनमें 10 अयोध्या में तथा 15 लाशें बिजनौर व धामपुर के ग्रामीण इलाकों में मिलीं। बिजनौर जिले में अब तक 33 लोग हिंसा में मारे जा चुके हैं।

गुजरात में पालनपुर कस्बे में आज हिंसा भड़कने से तीन जनों की मृत्यु हो गई तथा आठ अन्य घायल

[शेष पृष्ठ नौ पर]

अयोध्या में 2 नवम्बर को दिगम्बर अखाड़े के पास गली में पड़े पुलिस की गोली से वीर गति प्राप्त कारसेवकों के शव।

फैक्स फोटोः गोपाल शर्मा द्वारा

कार सेवकों पर गोलियां चलाने पर सुरक्षा बलों में भारी रोष

पी.ए.सी.व पुलिस से तो हथियार रखवा लिये थे

— गोपाल शर्मा —

अयोध्या, 3 नवम्बर। राम जन्मभूमि पर कार सेवा के लिए आगे बढ़ते निहत्थे और अहिंसक राम भक्तों को कुछ निश्चित सशस्त्र जवानों द्वारा गोलियों से भूनने पर अर्द्धसैनिक बलों में भारी रोष फैला हुआ है। लगता है देवोत्थान एकादशी और कार्तिक पूर्णिमा को किए गए नरसंहारों की और पुनरावृत्ति हुई तो सशस्त्र जवानों में आपस में भी संघर्ष हो सकता है।

यह निष्कर्ष सीमा सुरक्षा बल, केन्द्रीय सुरक्षा बल, रेलवे सशस्त्र पुलिस, केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल और उत्तरप्रदेश सशस्त्र पुलिस के कई जवानों से बातचीत और उनके क्रियाकलापों पर आधारित है। सूत्रों से यह भी पता चला कि ऐसी नौबत आ भी चुकी है जब आपस में संघर्ष छिड़ जाता लेकिन किसी कारण कठोर अनुशासन के भय से संघर्ष टल गया।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के एक जवान, जो एक तट पर तैनात है, ने क्षुब्ध होकर तीखे शब्दों में रोष व्यक्त किया, "कौन चलाना चाहता है अपने भाइयों पर गोली! मैंने तो एक भी फायर नहीं किया अब तक। लेकिन हम भी क्या करें कुछ गैर हिन्दू अधिकारी साधु-सन्तों और नौजवानों पर गुस्सा निकालना चाहते हैं।" गोपनीयता की सारी सीमाएं तोड़कर उसने बताया, "30 अक्टूबर को सरयू पुल पर पता नहीं कितने मार डाले गए लेकिन एक भी नहीं मरता। वह तो 61वीं बटालियन का कमांडेंट था जिसने स्वचालित एस.एल.आर से गोलियां चलाईं। उसके खुद के पास पिस्तौल थी लेकिन एक सशस्त्र जवान से एस.एल.आर. छीनकर बेतहाशा फायर किए।" यह बताने वाला बात पूरी कर भी नहीं पाया था कि उसके साथ बैठे जवानों में से एक दूसरा बोल पड़ा, "उसे [गाली देते हुए] सी.आर.पी. की नब्बेवीं बटालियन के उप अधीक्षक ने जवान से एस.एल.आर. लेकर गोलियां नहीं चलाई थी क्या! एक साथ बीस बीस फायर करता था। जैसे दुश्मनी निकाल रहा हो।" तभी पहला जवान याद करके बोलता है, "फायर करने वालों में 61वीं बटालियन का उप अधीक्षक भी था।" इस वार्ता के दौरान चार-पांच जवान सरयू पुल के बीच में कहीं खड़े थे। उन्होंने इस बात को भी प्रकट किया कि कुछ दूसरे बल के जवानों ने तो इन अधिकारियों के खिलाफ राइफलें भी तान दी थी लेकिन अधिकारियों ने बीच बचाव किया और मामला शान्त किया। इन जवानों का कहना था कि निहत्थे लोगों पर गोलियां चलाने

[शेष पृष्ठ 10 पर]

घर के लोग भी उन्हें अब असुर कहने लगे

[पत्रिका संवाददाता]

अयोध्या, 3 नवम्बर। जिन मांडा के लोगों ने उनके गांव के 'महाराजा साहब' विश्वनाथ प्रताप सिंह के प्रधानमंत्री बनने पर नाज किया था अब वे उनका नाम सुनना पसन्द नहीं करते।

अयोध्या में कार सेवा के लिए मांडा से आए जत्थे के कार सेवक राधेश्याम तिवारी, शिवचरण मिश्र, शिवअचल मिश्र, हरिशंकर मिश्र, धरमदीन चतुर्वेदी वगैरह में कुछ कृषक हैं और कुछ इंटर कॉलेज के प्राध्यापक। ये लोग मांडा का नाम लेते हुए भी अब संकोच करते हैं। इन्होंने बताया कि वे लोग ही नहीं अब तो विश्वनाथ प्रताप सिंह के रिश्तेदार-नातेदार भी उन्हें महाराज साहब के बजाय असुर कहने लगे हैं।

इंटर कॉलेज में प्राध्यापक शिवअचल मिश्र ने आरोप लगाया कि विश्वनाथ प्रताप सिंह आज से

[शेष पृष्ठ 10 पर]

कारसेवा विशेषांक

...ते की विजय

...र उत्तर प्रदेश सरकार ने मिलकर युद्ध-सी
...र का दावा था कि वहां परिंदा भी पर नहीं
...न को जोखिम में डालकर देश के हर प्रांतों
...न केवल सभी अवरोधों को ध्वस्त किया,
...करने के दृढ़ संकल्प को पूरा कर दिखाया।
...गुम्बद-से ढांचे पर भगवा ध्वज फहर उठा।
...त की विजय के इस महत्वपूर्ण अध्याय के
...अध्याय भी जुड़ गया। देवोत्थान एकादशी
...क पवित्र दिन राम की नगरी में पुलिस और
...तक तत्वों ने कारसेवकों पर वहशियाना ढंग
...रामभक्तों को निशाना लगा-लगा कर
...ठयों, बूटों से और घोड़े दौड़ाकर कारसेवकों
...रे संवाददाता गोपाल शर्मा इन ऐतिहासिक
...जूद थे। वहां से लौटकर उनका आंखों देखा

इतवारी पत्रिका/9 दिसम्बर, 1990

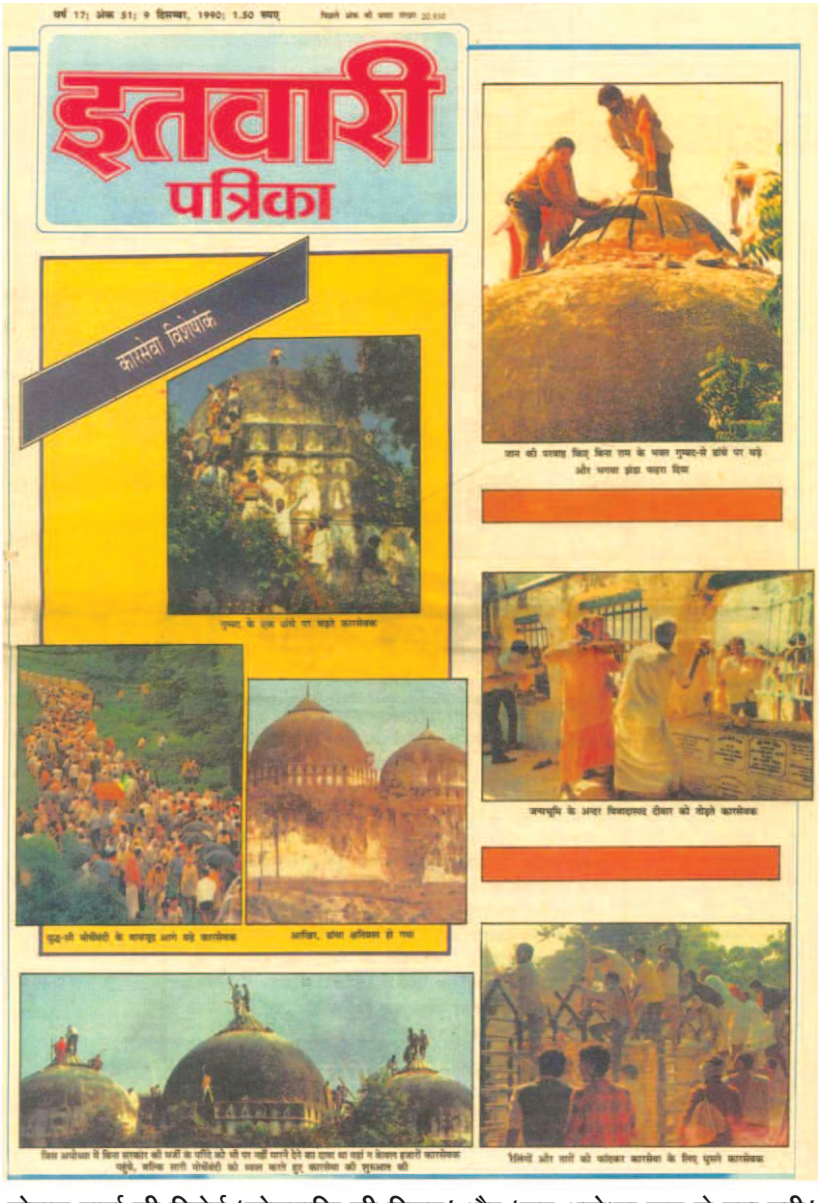

वर्ष 17; अंक 51; 9 दिसम्बर, 1990; 1.50 रुपए

इतवारी पत्रिका

कारसेवा विशेषांक

कारसे...
विशेषां...

जब अयोध्या खून

गोपाल शर्मा

1

इतवारी पत्रिका/9 दिसम्बर, 1990

गोपाल शर्मा की रिपोर्ट 'लोकशक्ति की विजय' और 'जब अयोध्या खून से नहा उठी' पर केंद्रित कारसेवा विशेषांक की अंतरराष्ट्रीय स्तर पर चर्चा हुई। श्री रज्जू भैया, श्री अशोक सिंघल सहित गणमान्य व्यक्तियों ने विशेषांक की प्रशंसा की।

अविस्मरणीय क्षणों को बनाया स्थाई.. साधुवाद!

[illegible]

॥ ॐ ॥

दूरभाष : ७७०३६५

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

राजेन्द्रसिंह
सह-सरकार्यवाह

केशवकुंज, झंडेवाला
देशबन्धु गुप्ता मार्ग,
नई दिल्ली-११००५५

दि. 22.12.1990

माननीय श्री कुलिशजी, सा.न.

इतवारी पत्रिका का कारसेवा विशेषांक देखने को मिला। इतने अच्छे चित्र, जानकारी और लेखों का संग्रह शायद ही कहीं मिले और वह भी कारसेवकों और स्वयंसेवकों की जेब का ध्यान रख कर इतने कम मूल्य में सभी कुछ विलक्षण है। आप और आपके सभी सहयोगी साधुवाद के पात्र हैं।

यह अंक संग्रहणीय है। हजारों लाखों घरों में पहुँचेगा और Video Cassette जैसी लोकप्रियता प्राप्त करेगा। मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि बड़े बड़े लोगों के घरों में उसकी कैसी मांग है। Dr. Jain & Shri Chandan Shekharji से सुना कि विदेशों में information cassette का कोई आकर्षण नहीं क्योंकि इसकी जानकारी वहाँ के T.V. देते हैं, पर आपके T.V. के असत्य के कारण समाचार पत्रों की और उन कैसेट की खूब मांग है।

आपने इस पत्रिका के माध्यम से उन अविस्मरणीय क्षणों को स्थाई बना दिया आपके लिए अनेकानेक धन्यवाद।

आपका अपना
रज्जूभैया

श्री कुलिश जी
प्रबन्ध सम्पादक
राजस्थान पत्रिका

6 दिसम्बर 1992

गोपाल शर्मा

जब ध्वस्त

5 दिसम्बर, 1992 को रात 8 बजे होंगे। मैं फैजाबाद से न्यूज फैक्स कर रहा था। उन कुछ खबरों में एक महत्वपूर्ण खबर यह भी थी कि 6 दिसम्बर को अयोध्या में कुछ भी हो सकता है.. यह बात कुछ महत्वपूर्ण लोगों से चर्चा में कही भी तो एक वरिष्ठ व्यक्ति का सुझाव था कि इतनी कड़ी सुरक्षा और इतने कठोर अनुशासन में ऐसा कुछ संभव नहीं है.. इसलिए ऐसी किसी बात का कोई महत्व नहीं है। अयोध्या मेरी आंखों में है। कितने ही रूप.. कितनी ही बार। जब रामलला के आगे ताला लगा हुआ था.. सींखचों वाले छोटे-से दरवाजे से झांकने पर 4-5 लोग रामधुनि करते दिखाई देते.. इसके बाद रामजन्मभूमि मुक्ति आंदोलन चला.. और, संयोग है जब पोप दिल्ली आए; उसी दौरान रामलला के सामने से ताला खुला। पहली कारसेवा.. कारसेवकों ने जान की जोखिम लेकर मुलायमसिंह यादव की सारी घेरेबंदियों को तोड़ते हुए गुंबद के शिखर तक पहुंचकर न केवल मामूली तोड़फोड़ की; बल्कि वहां झंडा तक फहराया। अयोध्या के लोगों ने बिना कोई परवाह किए कारसेवकों को अपना अतिथि बनाया और विश्व हिन्दू परिषद् के नेता अशोक सिंघल ऐन घोषित समय महानायक की तरह सड़क पर निकल पड़े। ..उसके बाद फिर कारसेवा की कोशिश हुई तो अयोध्या में पानी की तरह खून बहता हुआ देखा। मुझे याद है वे घंटे जब गली में कारसेवकों की लाशें पड़ी थीं.. नाली में खून बह रहा था.. और, आंसू गैस के गोलों की मार के कारण आंखें खोलना.. सांस लेना मुश्किल हो रहा था। उसके बाद वे क्षण भी देखे जब निशाना लगाकर पुलिस गोलियां चला रही थीं.. मैं उसका प्रत्यक्षदर्शी बना हुआ था। ये वे क्षण थे जब सिर मुंडाए उमा भारती शास्त्री नगर के कोने पर कारसेवकों के जत्थे के साथ रामधुनि कर रही थीं और घुड़सवार पुलिस उन्हें खदेड़ने में लगी हुई थी। इसके बाद आंदोलन की कितनी ही गतिविधियां चलती रहीं। सोमनाथ से समस्तीपुर के बीच लालकृष्ण आडवाणी की ऐतिहासिक रामरथ यात्रा भी आंखों में है। लेकिन वे 7 दिन.. जिन्होंने इतिहास को बदला.. और, उनमें 6 दिसम्बर, 1992 के वे 7 घंटे.. जिनमें विवादित ढांचा ध्वस्त हुआ.. उसके एक-एक दृश्य मंडरा रहे हैं। ये सभी घटनाएं 'कारसेवा से कारसेवा तक' पुस्तक में वर्णित हैं; 6 दिसम्बर की घटना को 'महानगर' के पाठकों के लिए प्रस्तुत किया जा रहा है।

भोर हो चुकी थी। धुंध छाई थी। अंधेरा पूरी तरह नहीं छंटा था। फैजाबाद से अयोध्या पहुंचने की जल्दी थी। 5 दिसम्बर की कारसेवकों की भीड़ देखते हुए किसी के लिए अनुमान लगाना मुश्किल नहीं था कि 6 दिसम्बर को सूर्य निकलने के बाद अयोध्या में प्रवेश करना मुश्किल हो जाएगा। वाहन जा नहीं सकेंगे और जहां से कारसेवा देखी जा सके वहां से नहीं पहुंचा जा सकेगा।

उस धंधलके में भी फैजाबाद पूरी तरह से जगा हुआ था। कारसेवकों के जत्थे अयोध्या की ओर बढ़ रहे थे। नारे नहीं लग रहे थे लेकिन उनकी चाल में उतावलापन था। फैजाबाद नगर की सड़कों पर दर्जनों परिवार अपने घरों के आगे खड़े थे और कारसेवकों से रुककर नाश्ता करने का आग्रह कर रहे थे। कारसेवकों को जल्दी थी, वे नाश्ता हाथ में ले लेते और करते हुए आगे चल पड़ते। केतलियों में पड़ी चाय का धुआं बाहर निकल रहा था लेकिन कोई कारसेवक रुक कर चाय पीने की स्थिति में नहीं था।

सुबह के 6 बजे थे। फैजाबाद चौक से आगे अयोध्या के मुख्य मार्ग पर कारसेवक ही कारसेवक थे। बहुत-से सड़कों पर तैनात होने में लगे थे और बहुत-से पंक्तियां बांधकर हाथों में बैनर-झंडे लिए अयोध्या की ओर बढ़ रहे थे। बीच-बीच में 'जयश्रीराम' के नारे लग रहे थे और अनुशासनपूर्ण माहौल दिखाई दे रहा था।

ज्यों-ज्यों अयोध्या पास आती गई त्यों-त्यों कारसेवकों की भीड़ बढ़ती गई। अयोध्या के मुख्य राजमार्ग पर वाहन निकलने की स्थिति नहीं थी और सरयू की ओर तो जैसे तट पर कारसेवकों की एक और नदी बह रही थी। सरयू का जल शांत था लेकिन कारसेवकों में तट की मिट्टी लेकर जन्मभूमि परिसर की ओर जाने की जल्दी थी। लगता था शांत सरयू के तटों से होकर वेगवान नदी बह रही है। कारसेवकों में इस बात की होड़ लगी हुई थी कि कौन कितनी अधिक मिट्टी ले जाकर कारसेवा करेगा। धोती पहने हुए कारसेवक धोती में मिट्टी बांध रहे थे तो महिलाएं अपने पल्लू में। कई पति-पत्नी या परिवार वाले कारसेवक मिट्टी की गठरी बांधकर एक-एक छोर पकड़कर लटकाकर ले जा रहे थे। सरयू तट से लेकर जानकी भवन ट्रस्ट जाने वाले रास्ते तक कारसेवकों की रेलमपेल थी; उस भीड़ को पार नहीं किया जा सकता था।

...उस समय तक आम कारसेवकों के लिए आकर्षण का केन्द्र सरयू तट था तो पत्रकार जन्मभूमि परिसर या उसके सामने के मानस भवन की छत पर इकट्ठे होने लगे थे। भारतीय जनता पार्टी से जुड़े लोग या राजनीति में रुचि रखने वाले कुछ सौ लोगों के लिए आकर्षण का केन्द्र था जानकी महल ट्रस्ट। वहां आडवाणी, डा. जोशी सहित सभी प्रमुख नेता ठहरे थे। आठ बजे थे। जानकी महल के पार्श्व भाग के तंग गलियारे से मोरोपंत पिंगले सफेद कमीज और पायजामा पहने हुए आते दिखे। रामजन्मभूमि मुक्ति आंदोलन के मुख्य सूत्रधार और विश्व हिन्दू परिषद के प्रमुख मार्गदर्शक। चेहरे पर कहीं कोई भाव नहीं। नरसिंह राव के युवापन का यह साथी चुपचाप आगे बढ़ गया। अशोक सिंघल ही नहीं, हो.वे. शेषाद्रि, कुप्पहली सीतारमैया सुदर्शन, विजयराजे सिंधिया, विष्णुहरि डालमिया, आचार्य गिरिराज किशोर वगैरह सभी वहीं थे। विभिन्न कक्षों से नाश्ता करने, हंसी-ठहाकों की आवाजें आ रही थीं और सब तैयार होकर जन्मभूमि परिसर पहुंचने की तैयारी में थे। आडवाणी, डॉ. जोशी अलग-अलग निकले, उनके समर्थन में

लोकार्पण समारोह में गोपाल शर्मा की पुस्तक कारसेवा से कारसेवा तक का अवलोकन करते कर्पूरचंद कुलिश और लालकृष्ण आडवाणी।

12.27 बजे- मेटल डिटेक्टर तोड़कर ले जाए गए और लोहे की चद्दरें खींचकर उतार ली गईं।
12.28 बजे- रामलला का सिंहासन बाहर निकाला जा रहा था।
12.29 बजे- रामलला की प्रतिमा, श्रृंगार का सामान और पूजा की पेटियां बाहर निकलती दिखाई दीं।
12.35 बजे- पहली बार तीन घायल कारसेवकों को चार-चार कारसेवक उठाकर ढांचे से बाहर लाते दिखे।
12.37 बजे- मुख्य गुम्बद के सामने की दीवार पर लगा फारसी का पद्य लेख तोड़ लिया गया।
12.38 बजे- कुछ महिलाएं विवादित ढांचे से ईंटें लेकर बाहर निकलती दिखाई दीं। मंदिर का दानपात्र बाहर आया।
12.45 बजे- पुलिस का केबिन, क्लोज सर्किट, टीवी कैमरे और सारी रैलिंग तोड़कर फेंकी जा चुकी थीं। सारी खिड़कियां टूट चुकी थीं। 1990 की कारसेवा में पुलिस की गोली से मारे गए कोठारी बंधुओं के माता-पिता सुमित्रा और हीरालाल कोठारी सीता रसोई की छत से यह दृश्य देखकर भाव विह्वल हो रहे थे और आंसू पोंछ रहे थे।
12.50 बजे- कारसेवक मौत से खेलते हुए गुम्बद गिराने में लगे थे। कुछ ऊपर से ढांचे को तोड़ रहे थे और कुछ उनके नीचे लोहे की चद्दर सिर पर ताने उसकी दीवार तोड़ने में लगे थे। नीचे कपड़े लटकाकर उससे बांधकर फावड़े-गैंती गुम्बदों पर पहुंचाए जा रहे थे।
1.10 बजे- पहला दरवाजा साफ हो चुका था और ढांचे को तोड़ने के लिए कारसेवकों के आगे बढ़ने की होड़ लगी हुई थी। ...उस समय सीता रसोई की छत पर पुलिस आयुक्त और दूसरे अधिकारीगण हाथ बांधे यह दृश्य देख रहे थे। एक छोटी छत के कोने में श्रीशचन्द्र दीक्षित चुपचाप खड़े थे।
1.27 बजे- दाहिनी गुम्बद को क्षतिग्रस्त करने में लगे कारसेवक उसके शीर्ष पर भोजन के पैकेट खोलते दिखाई दिए। कपड़े से बांधकर ऊपर पानी की बाल्टी पहुंचाई गई। ...अयोध्यावासी दौड़-दौड़कर गैंती-फावड़े टोकरियां लाने में लगे हुए थे।
1.35 बजे- दूसरी दीवार साफ हो गई।
1.50 बजे- बाईं ओर का गुम्बद ध्वस्त। कई कारसेवकों के दबने का अनुमान। चार-पांच घायल कारसेवक उठा-उठाकर ले जाए गए। एम्बुलेंस तैयार थी।
2.25 बजे- मध्य में स्थित मुख्य द्वार साफ हो गया। ...विवादित ढांचे के नाम पर सिर्फ दो गुम्बद बचे थे।
2.30 बजे- किसी महिला द्वारा मंच से चिल्लाकर की गई अपील का यह वाक्य सुना दिया, 'नीचे उतर जाएं, नहीं तो चोट आ सकती है।'

उसी समय मंच पर प्रमोद महाजन आए। उन्होंने मंच पर बैठे लोगों को बताया कि इसी तरह चलता रहा तो पांच बजे तक बाकी दोनों ढूट जाएंगे। उस समय मंच पर शेषाद्रि, आडवाणी, डा. जोशी और सिंघल नहीं थे।

आचार्य धर्मेन्द्र ने कहा- मलबा नहीं, यह तो प्रसाद है, सब लोग ले आओ। उमा भारती कड़वाहट भरे शब्दों में बोलीं- प्रसाद नहीं, बाबर की हड्डियां हैं ये।

2.45 बजे- मंच से साध्वी ऋतम्भरा ने ललकारा (वह पूरे परिसर में साफ-साफ सुनाई दे रहा था) और इसके साथ ही गुम्बदों को तोड़ने के काम में और तेजी आ गई:

'कहो गर्व से हम हिन्दू हैं, हिन्दुस्तान हमारा है,
हर-हर महादेव की फिर से, शिवसेना निकल पड़ी है,
सिर पर कफन बांधकर फिर से, रामचन्द्र की फौज चली है,
गली-गली में मातु भवानी का गूंजा जयकारा है'

इस पर दूर-दूर तक खड़े हजारों कारसेवकों ने समवेत स्वर में कहा- 'आज का इतिहास, कारसेवकों का अद्भुत कार्य स्वर्णाक्षरों में लिखा जाएगा। पीएसी और केन्द्रीय रिजर्व पुलिस का नाम भी स्वर्णाक्षरों में लिखा जाएगा जिन्होंने इस कार्य में सहयोग दिया।'

अयोध्या में मौजूद केन्द्रीय रिजर्व पुलिस की करीब 20 कम्पनियां वापस फैजाबाद जा रही थीं। उनके आगे-आगे फैजाबाद शहर पुलिस के एक अधिकारी ऐलान करते जा रहे थे, 'कारसेवक इन्हें निकलने का रास्ता दें। सीआरपी अपनी बैरकों में वापस लौट रही है।' ... और कारसेवक 'जयश्रीराम' के नारे लगाते उनके लिए जगह खाली करवा रहे थे। इसी के बाद मंच से ऐलान हो गया, 'कारसेवक जहां हैं वहां के रास्ते रोक दें। कोई अपने स्थान से नहीं हिले। कारसेवा जारी है। न कोई अयोध्या से बाहर जाएगा, न कोई अयोध्या में आएगा।

11.50 बजे- विवादित ढांचे के बाईं ओर रामदीवार के पास से (जहां की व्यवस्था पुलिस के जिम्मे थी) दस-बारह युवा कारसेवकों ने विवादित ढांचे पर पुलिस को लक्ष्य करके पत्थर फेंके जिधर ढांचे पर चढ़ते कारसेवक को लाठियां मारी गईं थीं।
11.52 बजे-... मंच से नीचे उतरकर अशोक सिंघल आए और उन्होंने चबूतरे के पास कारसेवकों को समझाने की कोशिश की।
11.53 बजे- ढांचे के सामने, पीछे और बाईं ओर सौ-सौ, डेढ़-डेढ़ सौ युवा कारसेवक पहुंचकर घेरा डाल चुके थे। उन्होंने तीन ओर से पथराव शुरू कर दिया।
11.54 बजे- सम्पूर्ण परिसर पर युवा कारसेवकों का कब्जा हो गया। एक पैंट-शर्ट पहने करीब 18-20 वर्ष का कारसेवक बाईं गुम्बद पर चढ़ता दिखाई दिया। वह गुम्बद में से निकली हुई लोहे की छड़ पकड़कर खड़ा हुआ और झंडा हिलाना शुरू कर दिया। 'जयश्रीराम' और तालियों की गगनभेदी आवाज गूंज उठी।

करीब पांच सौ कारसेवकों ने विवादित ढांचे पर हमला कर दिया। ढांचे की सुरक्षा के लिए तैनात पुलिसकर्मी जान बचाने की फिराक में भागते दिखे। कारसेवक तीनों गुम्बदों पर चढ़ गए और 30 अक्टूबर, 1990 की तरह सबसे पहले 'कमल दल' आकार की उभरी हुई नक्काशी को तोड़ने लगे।
11.59 बजे- कई सौ कारसेवक विवादित ढांचे को जगह-जगह से तोड़ने में लग गए। जगह-जगह भगवा झंडे फहराए जा रहे थे। कारसेवक पेड़ों और ढांचे की दीवारों पर चढ़ गए और बंदरों की तरह झूल रहे थे। उस समय एक भी पुलिसकर्मी जन्मभूमि परिसर में मौजूद नहीं था।
...उधर रामकथा कुंज के मंच से इस समूचे दृश्य का बायां कोण ही देख पा रहे हो.वे. शेषाद्रि, लालकृष्ण आडवाणी, डॉ. मुरलीमनोहर जोशी, विजयराजे सिंधिया ने भाव भरे शब्दों में कारसेवकों से विवादित ढांचे से नीचे उतर आने की अपील की। सिंघिया ने कहा-कारसेवक नीचे उतर आएं, यह राम का मंदिर है, इसे तोड़ रहे हैं आप, रामलला अंदर विराजे हुए हैं। आपको मेरी सौगंध है...रामलला की सौगंध है। शेषाद्रि बोले- कोई भी स्वयंसेवक गुम्बद पर चढ़ा हो तो वह नीचे उतर आए। ...तो वह नीचे उतर आए। ...इन अपीलों की कारसेवकों पर कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई और ढांचे में घुसने वालों की संख्या बढ़ती ही जा रही थी तो किसी ने मंच से पूछा, 'आवाज पहुंच रही है या नहीं?' किसी ने मंच से ही जवाब दे दिया, 'आवाज तो पहुंच रही है।' डा. जोशी ने कहा, 'यह क्या कर रहे हैं आप? कारसेवक होकर अनुशासन भंग कर रहे हैं।'
... आवाज मंच पर, रामकथा कुंज के विशाल मैदान में और आसपास चुपचाप खड़े सवा लाख से अधिक कारसेवकों तक पहुंच रही थी लेकिन विवादित ढांचे को तोड़ने के कोलाहल में जन्मभूमि परिसर तक एक भी नेता की आवाज स्पष्ट सुनाई नहीं दी।

संस्मरण

हुआ ढांचा

नारे लगे और वे अलग-अलग गाड़ियों में र वहां से निकले।

...जन्मभूमि परिसर में उस समय नृत्यमंडप के रे पर चार-पांच कार्यकर्ता झाड़ू लगा रहे थे। ी नेकर पहने हुए डेढ़-दो सौ स्वयंसेवक ासन बनाए रखने की रणनीति में व्यस्त थे। दर्जन स्वयंसेवकों को विवादित ढांचे के सामने व्यवस्था का ध्यान रखना था और शेष सेवकों को 'कारसेवा' की व्यवस्था देखनी थी बाहर से आए हुए कारसेवक सिर्फ अधिगृहीत पर सरयू नदी से लाई मिट्टी डालते जाएं और बढ़ते जाएं। किसी भी तरह का अवरोध पैदा हो। ...रामकथा कुंज के मंच पर छोटे-मोटे सियों का आना शुरू हो गया था। सामने के किलोमीटर क्षेत्र में फैला विशाल मैदान सेवकों से ठसाठस भर चुका था। नौ बजे तक मैदान में एक लाख कारसेवक बैठे थे तथा प्रांतों हसाब से कारसेवा से संबंधित हिदायतें दी जा थीं। मंच के पीछे चौदह-पन्द्रह कारसेवक चार यों में खड़े होकर तैयार हो रहे थे जिनके हाथ ावड़े, गैंती और परातें थीं।

9.30 बजे- पत्रकार चार हिस्सों में बंटे हुए थे- (1) मानस भवन की छत पर (2) अधिगृहीत स्थल पर (3) विवादित ढांचे के पीछे (4) रामकथा कुंज के मंच पर। नृत्यमंडप के लिए बने हुए चबूतरे पर पूजा के लिए दरी बिछा दी गई थी। वहां जजमान के रूप में ओमप्रकाश सिंघल और अशोक सिंघल की बहन बैठी थीं। प्रमुख साधु-संतों का आना शुरू नहीं हुआ था लेकिन पचास-साठ साधुओं के आ जाने से चबूतरा बिल्कुल भर चुका था। साधुओं के इस जमावड़े से स्वामी चिन्मयानन्द परेशान थे और उन्हें वह जगह खाली करने को कह रहे थे जहां प्रमुख संतों को आकर बैठना था।

9.35 बजे- परमहंस रामचन्द्रदास दिखे। वे अन्य दिनों से अलग दिख रहे थे। चेहरे पर फक्कड़पन की बजाए रहस्यमय अंदाज था और सजे-धजे से थे। स्वामी वामदेव, युगपुरुष परमानन्द, हो.वे. शेषाद्रि, कु.सी. सुदर्शन, आडवाणी, डॉ. जोशी, विनय कटियार जन्मभूमि परिसर में दिखाई दिए। रामकथा कुंज के लाउडस्पीकर से जोर से चिल्लाकर कही जा रही बात तो जन्मभूमि परिसर में सुनाई दे रही थी, अन्यथा कोई कुछ बोल रहा है बस इतना लग रहा था।

10.15 बजे- रामकथा कुंज में मंच का संचालन कर रहे आचार्य धर्मेन्द्र कारसेवकों से मुखातिब थे। उन्होंने लाउडस्पीकर से कहा, 'आप जो सरयू की रेती और जल लाए हैं उस पानी से हम फर्श को धोएंगे, इस रेत को वहां इकट्ठा करेंगे। यही कार्यक्रम निश्चित हुआ है। कुछ अखबारों ने कारसेवकों के हवाले से लिखा है कि यह कैसी कारसेवा है, तो इसलिए मैं आपसे पूछना चाहता हूं कि जिस प्रकार की कारसेवा का निश्चय संत समाज ने किया है उसमें आपका विश्वास है या नहीं- कृपया अपने हाथ ऊपर करके बताएं?' इस पर कारसेवकों के अपार जनसमूह ने हाथ ऊंचे कर लिए। आचार्य धर्मेन्द्र ने कहा, 'एक नहीं, दोनों हाथ ऊंचे कीजिए।' कारसेवकों ने दोनों हाथ ऊंचे करके 'जयश्रीराम' का नारा लगाया। आचार्य धर्मेन्द्र ने फिर कहा, 'यदि इसमें किसी का विरोध हो तो वह भी हाथ ऊंचे करें।' किसी ने ऐतराज नहीं किया।

10.30 बजे- जन्मभूमि परिसर में प्रवेश के लिए चार द्वार थे। एक द्वार रामकथा कुंज की ओर से था जिधर कारसेवकों का जनसैलाब उमड़ा हुआ था और उधर की सारी व्यवस्था स्वयंसेवक देख रहे थे। दूसरा द्वार विवादित ढांचे से हटकर बाईं ओर रामदीवार से होकर था। इस तरफ पुलिसकर्मी निगरानी रख रहे थे। तीसरा द्वार जन्मभूमि परिसर के ठीक सामने सीखचों का था जिस पर सांकल लगी हुई थी। वहां कारसेवक खड़े थे लेकिन कोई पत्रकार या विशिष्ट व्यक्ति आग्रह करने पर उधर से आ सकता था। चौथा द्वार जन्मभूमि परिसर के दाहिने वाला मुख्य सड़क से लगता हुआ था। उधर से दर्शनार्थी आ-जा रहे थे और वहां की संपूर्ण व्यवस्था सशस्त्र पुलिस और अधिकारियों के जिम्मे थी। उस तरफ कोई भी कार्यकर्ता नियुक्त नहीं था।

...अचानक 30-40 युवा कारसेवकों ने मुख्य सड़क वाले द्वार पर दबाव बनाया और जन्मभूमि परिसर में आने की जिद करने लगे। यह देखकर कुछ कार्यकर्ता दौड़े और उनको समझाने की कोशिश की कि अपने-अपने प्रदेशों की वाहिनियों में जाइए तथा कारसेवा में भाग लीजिए। पुलिस ने भी घेरा तंग कर लिया और किसी को परिसर में नहीं आने दिया। अयोध्या के मजबूत कद-काठी के महंत धर्मदास पहलवान दौड़-दौड़कर कारसेवकों पर काबू पाने की चेष्टा में लग गए। ...पत्रकार-फोटोग्राफर इन युवकों के पास पहुंच गए..तब तक यही महत्वपूर्ण घटना थी और कहीं यह उस दिन की सबसे महत्वपूर्ण घटना ही न हो- यह सोचकर दर्जनों वीडियो कैमरे शुरू हो गए...अलग-अलग कोणों से उनकी हरकतों को कैद किया जा रहा था।...उन युवकों में और उत्साह आ गया। वे उछलने-कूदने लगे और आगे बढ़ने की जिद करने लगे। उनके पीछे युवा कारसेवकों का एक और जत्था आ गया। उनमें से 8-10 कारसेवक लोहे की छड़, लकड़ियां, बांस के मोटे टुकड़े लिए हुए थे। लोहे की रेलिंगों और बल्लियों से बनी बाड़ पर चढ़-चढ़कर उछलने लगे। पुलिस सिर्फ सामने खड़े होकर तंग घेरा किए जा रही थी, कुछ कार्यकर्ता उन युवा कारसेवकों को समझाते रहे और धर्मदास पहलवान दौड़-दौड़कर इन युवकों को रोकने की मशक्कत कर रहे थे।

...तभी उन युवा कारसेवकों ने लोहे की रेलिंगों की बाड़ गिरा दी। वहां छाया के लिए लगा शामियाना भी गिरा दिया और पुलिस का घेरा पारकर जन्मभूमि परिसर में प्रवेश कर गए। प्रवेश करने वाले युवकों की संख्या मुश्किल से चालीस रही होगी। तभी पुलिस ने वापस स्थिति पर नियंत्रण पा लिया और वह रास्ता रोक दिया।

10.45 बजे- जन्मभूमि परिसर में पहुंच चुके युवक उछल-कूद करने लगे तथा नारेबाजी करने लगे। कैमरों का दायरा और नजदीक हो गया। ...'जिस हिन्दू का खून न खौला, खून नहीं वह पानी है' का अकेला नारा और अंदर पहुंच चुके युवा कारसेवकों के चेहरे पर निराशा का भाव। वे घेरा बनाकर चुपचाप बैठ गए तथा उनको उठाकर बाहर नहीं कर दिया जाए इस कोशिश में आपस में और नजदीक आकर बैठते गए। तभी सुरक्षा के लिए खाकी नेकर पहने स्वयंसेवकों ने आपस में हाथ बांधकर चबूतरे को घेर लिया। उस जगह साधु-संत बैठे थे और पूजा की तैयारियां हो रही थीं।

10.47 बजे- कोटा जिले के एक कारसेवक ने एक प्रेस फोटोग्राफर के प्रति आपत्ति की कि वह कारसेवकों को उकसा क्यों रहा है, साथ ही, डांटा भी कि ऐसा अब किया तो कैमरा तोड़ दूंगा। दर्जनों फोटोग्राफर-पत्रकार खड़े थे, सबने फोटोग्राफर को समझाया। शांति हो गई।

11.00 बजे- तभी कुछ स्वयंसेवक घेरा तोड़कर परिसर में घुस आए युवा कारसेवकों को एक-एक को पकड़कर, उठाकर बाहर निकालना शुरू कर दिया। सिर्फ 15-20 युवा कारसेवक एक जगह बैठे रहे।

11.10 बजे- जिलाधिकारी, एसपी और उनके पीछे घेरा बनाए करीब दो दर्जन पुलिसकर्मी मुख्य सड़क वाले द्वार से परिसर में आए तथा इधर-उधर देखते हुए रामकथा कुंज की ओर बढ़ गए। आपस में बोल रहे थे, 'सब ठीक-ठाक है, इतना तो होता ही है।'

11.15 बजे- दर्शनार्थियों को रामलला के दर्शन करने से अधिकारियों ने रुकवा दिया। मुख्य सड़क वाले द्वार पर काफी संख्या में सशस्त्र पुलिसकर्मी तैनात कर दिए गए। परिसर में प्रवेश करने की ताक में सड़क पर खड़े 50-60 कारसेवक उस सड़क से आगे बढ़ते हुए विवादित ढांचे के पीछे की ओर चले गए। करीब दो दर्जन खाकी नेकर पहने स्वयंसेवक आपस में हाथ पकड़कर मुख्य सड़क वाले द्वार से लेकर विवादित ढांचे के प्रवेश द्वार तक खड़े हो गए।

11.30 बजे- मानस भवन की छत पर (जहां विश्व हिन्दू परिषद ने पत्रकारों के बैठने की व्यवस्था की थी) डेढ़-दो सौ कारसेवक चढ़ गए तथा झंडे हिला-हिलाकर जन्मभूमि परिसर में खड़े फोटोग्राफरों-पत्रकारों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने लगे। ...परिसर में एकजुट होकर बैठे युवा कारसेवकों में से एक ने कहा, 'हम कांग्रेस के एजेंट नहीं हैं। स्वयंसेवक हैं। हम चाहते हैं कम-से-कम भगवा ध्वज फहरना चाहिए। इतनी दूर से आए हैं। भगवा झंडा तो मुलायम सिंह के राज में भी फहरा था, आज तो हमारी सरकार है।'

5.00 बजे- तीसरा गुम्बद ढह गया।

6.00 बजे- 1528 ई. में मीर बाकी द्वारा बनाया गया बाबरी ढांचा साफ हो गया। चारों ओर 'जय श्रीराम, हो गया काम' का उद्घोष शुरू। मंदिर में घंटे-घड़ियाल फिर बज उठे। शंख ध्वनि गूंज उठी और वातावरण को बेधती तुरही की आवाज आने लगी।

6 दिसम्बर, 1992 को रामकथा कुंज पर कारसेवकों को संबोधित करते लालकृष्ण आडवाणी, विजयाराजे सिंधिया, डॉ. मुरली मनोहर जोशी और हो. वे. शेषाद्रि।

छे लपके तब कुछ कार्यकर्ताओं ने उसे ले सीखचों के द्वार से निकल जाने को ढ़ा तो कुछ फोटोग्राफर-पत्रकार पीछे- इन युवा कारसेवकों ने फोटोग्राफरों को निर्देश दे दिए। जिस पत्रकार को स्थिति में आ गई वह वहां से हटकर सुरक्षित और जिन्होंने फोटुएं खींचनी जारी रखीं पटी शुरू हो गई। जो स्वयंसेवक हालात ाए थे उनको या तो खदेड़ दिया गया या ग गए।

त ढांचे के पीछे की ओर रामदीवार के रसेवकों ने विवादित ढांचे की ओर बढ़ना मार्ग से होकर थोड़ी देर पहले ही वहां वक ने लपककर बाएं ढांचे पर चढ़ना लिसकर्मी ने उसको कुछ लाठिया मारी। बूतरे पर हो रही पूजा में विघ्न आ गया। खड़े हो गए।

नेता समझ रहे थे अपीलों का कोई असर नहीं हो रहा है जबकि ढांचा तोड़ने में लगे कारसेवकों को नहीं सुनाई देने वाली आवाजों से कोई मतलब नहीं था।

12.00 बजे- रामकथा कुंज के मंच से चिल्लाकर कहा गया पहला वाक्य सुनाई दिया, 'लाइन काटो। बिजली की लाइन काटो। करंट आ जाएगा। कारसेवक चढ़े हुए हैं।' ...विवादित ढांचा टूट रहा था, मिट्टी उड़ रही थी। परिसर में खड़े पांच हजार कारसेवक 'श्री राम जय राम जय राम' की धुन गा रहे थे। यह रामधुन ढांचा तोड़ने वाले कारसेवकों में और जोश पैदा कर रही थी। ...कारसेवकों ने फोटोग्राफर-पत्रकार को देखते ही मारपीट करनी शुरू कर दी थी। ...विवादित ढांचे के पीछे एक पुलिसकर्मी के कहने पर दो फोटोग्राफरों से मारपीट की गई।

12.02 बजे- मानस भवन की छत पर हरा झंडा जलाया गया और मुख्य मार्ग पर नरसिंह राव का पुतला जलाया गया। पुलिस कंट्रोल रूम की छत पर (सीता रसोई) खड़ी महिलाएं झंडे हिला-हिलाकर ढांचे को तोड़ने में लगे कारसेवकों को जोश दिला रही थीं। उनमें उन्माद जैसा छाया था। उन्होंने समझ लिया था मैं पत्रकार हूं इसलिए बार-बार ईंटें लेकर मारने दौड़ रही थीं और दूसरे कारसेवक उन्हें रोक रहे थे।

12.05 बजे- मुलायम सिंह यादव के शासन में लगाई गई लोहे की पाइपों की रेलिंग कारसेवकों का मुख्य हथियार बनीं। इन एक हजार से अधिक सशक्त औजारों के बल पर कारसेवक जगह-जगह से ढांचे को तोड़ रहे थे। एक बंद जीप में फावड़े-गैंतियां आ गए और वे भी किसी ने कारसेवकों को बांट दिए।

12.10 बजे- पुलिस द्वारा मार्ग रोकने के काम में लिए जाने वाले रस्से विवादित ढांचे के बाहर के छज्जों से बांध दिए गए और उन्हें खींचा जाने लगा।

12.15 बजे- सामने की ओर के सभी छज्जे तोड़ दिए गए। एक दीवार साफ हो गई। अंदर की दोनों दीवारें, जो मुख्य द्वार, तीन गुम्बद और उनसे सटी सामने की द्वार रूपी दीवार तोड़ी जा रही थी।

12.25 बजे- सामने की ओर से सभी छज्जे तोड़ दिए गए। एक दीवार साफ हो गई। अंदर की दोनों दीवारें, दो मुख्य द्वार, तीन गुम्बद और उनसे सटी सामने की द्वार रूपी दीवार तोड़ी जा रही थी।

12.26 बजे- सारे मंदिरों में आरतियां होनी शुरू हो गईं। घंटे-घड़ियाल- शंख बज उठे। लकड़ी के स्तम्भ उखाड़ लिए गए। जिसके हाथ में जो था वह उससे ढांचा तोड़ने लगा था। ढांचे के दूर-दूर तक चुपचाप खड़े दो लाख से अधिक कारसेवक यह दृश्य अचंभित लेकिन प्रसन्न भाव से देख रहे थे। मेरे पास खड़ा एक कारसेवक दोनों हाथ ऊपर कर-करके 'जय श्रीराम' बोलता जाता और भावविह्वल होकर रोता जा रहा था।

रामभक्तों का महाकुंभ

4 अप्रेल, 1991 को बोट क्लब पर ऐतिहासिक हिन्दू सम्मेलन को संबोधित करते श्री अटलबिहारी वाजपेयी।

4 अप्रेल, 1991 को राष्ट्रपति भवन के सामने जनसमुद्र उमड़ आया। बोट क्लब से इंडिया गेट तक तो तिल रखने की जगह थी ही नहीं, उधर की दाएं–बाएं निकलने वाली सड़कें भी रामभक्तों से अटी पड़ी थीं। राम के नाम पर झूमते लोगों के इस अपार जनसमूह को देखकर लगता था जैसे सागर हिलोरें ले रहा हो। दिल्ली राममय और केसरिया हो उठी। यह जैसे रामभक्तों का महाकुंभ था। आजादी के बाद दिल्ली में कभी इतने लोग एक साथ इकट्ठे नहीं हुए। रैली की विशालता का अंदाज इसी बात से लगाया जा सकता है कि राष्ट्रपति भवन के सामने बने बोट क्लब के मंच से लेकर जनपथ और मानसिंह रोड तक के सवा दो किलोमीटर लंबे और करीब दो सौ मीटर से अधिक चौड़े इस क्षेत्र में केवल सिर ही सिर दिखाई दे रहे थे।

सांधु–संतों के नेतृत्व में कई लाख लोगों ने राम जन्मभूमि पर राममंदिर निर्माण का संकल्प लिया। वक्ताओं ने जोश से ठांठे मारते रामभक्तों को रामभक्ति–राष्ट्रभक्ति का संदेश दिया। 'राम भारत है–भारत राम है' का मंत्र ही राष्ट्र की जीवनदायिनी शक्ति है, का पांचजन्य फूंका गया। चेतावनी दी गई कि हिन्दू हितों की उपेक्षा करने वाली कोई सरकार नहीं अब नहीं चलेगी। बार–बार भिंची हुई मुट्ठियों और चिलचिलाती धूप में लाल होते चेहरों के हुंकारते जन सैलाब के बीच दोहराया गया कि हिन्दू हितों का विरोध करने वाले दलों को वोट नहीं दिए जाएं। यह भी कहा गया कि भारतीय जनता पार्टी ही है, जिसने रामजन्मभूमि के सवाल पर अपना राजनीतिक अस्तित्व दांव पर लगा रखा है।

राष्ट्रपति रामास्वामी वैंकटरमण उस दिन दिल्ली में ही थे। विश्व हिन्दू परिषद की ओर से राष्ट्रपति सचिवालय को औपचारिक रूप से निवेदन किया गया था कि उस दिन दिल्ली में वोट क्लब पर हो रही विराट हिन्दू रैली के दौरान एक प्रतिनिधिमंडल राष्ट्रपति से मिलकर ज्ञापन देना चाहता है। राष्ट्रपति इतने व्यस्त भी नहीं थे कि ज्ञापन तक न ले सकें। कोई विदेशी मेहमान भी आए हुए नहीं थे, लेकिन देश के कोने–कोने से जुटे रामभक्तों की भावना का ध्यान नहीं रखा गया। राष्ट्रपति ने समय तक नहीं दिया।

कारसेवा होगी

मार्गदर्शक मंडल का निर्णय

कारसेवा के स्वरूप को लेकर संशय

कार सेवा का पूर्वाभ्यास

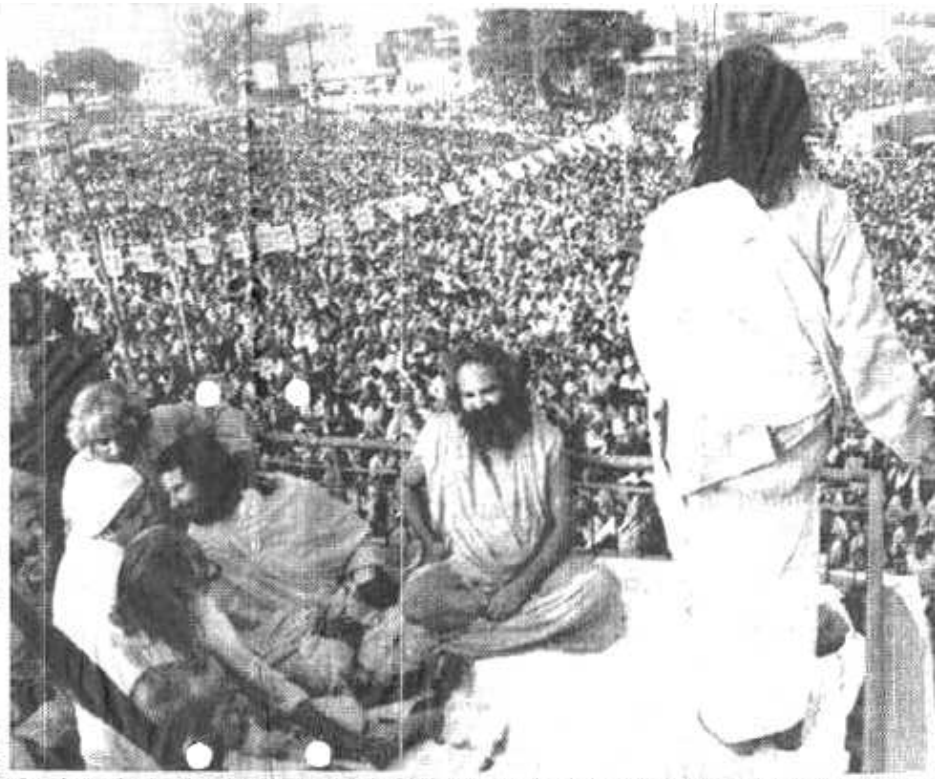

अयोध्या में कारसेवकों का हजूम, भोजन के पैकेट ट्रकों में

कारसेवकों में इस बात का संशय बना हुआ है कि कारसेवा किस रूप में होगी। प्रमुख कार्यकर्ता शंकित हैं कि 6 दिसम्बर को कुछ भी हो सकता है। विश्व हिन्दू परिषद से जुड़े साधु-संत किसी भी प्रकार के दांवपेंच के खिलाफ हैं और युवा कारसेवक तो विवादित ढांचा देखते ही उत्तेजित हो उठते हैं।

राजस्थान पत्रिका, 5 दिसम्बर, 1992

विवादित ढांचा ध्वस्त

विवादित ढांचा ध्वस्त करने में कोटा के चार सेवक अग्रणी

कारसेवकों को डर नहीं

राम मंदिर का निर्माण शुरू

—गोपाल शर्मा—

अयोध्या, 7 दिसम्बर। अयोध्या में राम मंदिर का निर्माण कार्य शुरू हो गया है। हजारों कार सेवक अभी यहां मौजूद है जो गगनभेदी नारे लगा रहे हैं। राम जन्म भूमि परिसर तक पहुंचने वाले सभी मार्ग अवरुद्ध कर दिए गए हैं। विवादित ढांचे का मलबा साफ कर रामलला की प्रतिमा स्थापित कर दी गई है।

अयोध्या में कर्फ्यू लगा दिया गया है लेकिन वास्तव में यहां कार सेवकों का ही कर्फ्यू है। गलियों व जन्म भूमि परिसर में उत्तर प्रदेश के पुलिसकर्मी कहीं- कहीं दिखाई देते हैं। बाकी कार सेवक ही नजर आते हैं। पुलिसकर्मियों से कार सेवकों को कोई परेशानी नहीं है।

विवादित ढांचा ध्वस्त किए जाने के बाद रविवार की रात अयोध्या में दीपावली मनाई गई। मिठाइयां बांटी गईं। कल रात यहां हर्षोल्लास का वातावरण था। लोग परस्पर बधाइयां दे रहे थे।

रामलला की मूर्ति कल रात 9 बजे ठीक उसी जगह मंत्रोच्चार के बीच स्थापित की गई जिस स्थान पर पहले विराजमान थी। रात 9 बजे से पहले विवादित ढांचे का मलबा साफ कर दिया गया था। मूर्ति की पुनः स्थापना के साथ ही निर्माण शुरू हो गया। उस समय विश्व हिन्दू परिषद के महामंत्री अशोक सिंघल, महन्त अवैद्यनाथ और परमहंस रामचन्द्र दास महाराज उपस्थित थे।

सोमवार दोपहर रामलला की प्रतिमा के दर्शन करने वालों का तांता लगा रहा। जहां कभी मुख्य गुम्बद का ढांचा था वहां पर लकड़ी के सिंहासन पर सांवले रंग की रामलला की 'बालरूप' छोटी प्रतिमा रखी हुई है। ऊपर इत्र चढ़ा हुआ है और पुजारी प्रसाद दे रहे हैं। पास में कई संन्यासी जमे बैठे हैं। इसी स्थान पर एक पक्के प्लेटफार्म का निर्माण हो रहा है। ऊंचाई तक जाने के लिए सीढ़ियां बना दी गई है और उस पर सीमेन्ट प्लास्टर लगा है। पता चला है कि वहां रातभर काम होता रहा। कारसेवकों जिनमें महिलाएं भी शामिल हैं सीमेन्ट का मसाला पकड़ाने और दूर- दूर बिखरे मलबे को साफ करने के लिए झाड़ लगी है।

रविवार दोपहर तक जिस स्थान पर विवादित ढांचा खड़ा था उसे बिल्कुल साफ कर नृत्य मंडप और सभा मंडप पर बने चबूतरे की तरह बिल्कुल साफ कर दिया गया है।

रामलला के दर्शन करने आए दक्षिण भारत के वरिष्ठतम संत पेजावर पीठ के विश्वेश तीर्थ से जब इस संवाददाता ने पूछा— "कल की कार सेवा अच्छी रही न?" जवाब मिला - "बहुत अच्छा हुआ। राम का काम हो गया।" जब यह सवाल किया गया कि क्या उत्तर प्रदेश सरकार का जाना उचित रहा? उन्होंने कहा- "इसमें क्या है! राम के काम में बहुतों ने बलिदान किए, सरकार का भी बलिदान हो गया।"

अयोध्या की जो गलियां रामजन्म भूमि परिसर में पहुंचती है, उन सभी को पेड़ काटकर, पत्थर डाल कर और ढांचे का मलबा पटक कर अवरुद्ध कर दिया गया है। चारों तरफ 'जय श्री राम के नारे लग रहे हैं।'

इस बीच कार सेवक धीरे- धीरे लौटने भी लगे हैं। कर्फ्यू के बावजूद फैजाबाद के नागरिक घरों से निकल कर कारसेवकों को भोजन दे रहे हैं।

पुलिसकर्मियों ने फैजाबाद- अयोध्या मार्ग खाली कर लिया है। मार्ग पर केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल और पी.ए.सी. की गाड़ियां लगातार दौड़ रही है। फैजाबाद में कर्फ्यू का असर नहीं है तो केवल वापस लौटने वाले कारसेवकों पर ही नहीं है। कई स्थानों पर बिल्कुल सन्नाटा छाया हुआ है।

रामजन्मभूमि में जिस स्थान पर रामलला की प्रतिमा विराजमान है उसके चारों ओर गुलाबी रंग के कपड़े का मंडप जैसा बनाया गया है। रामकथा कुंज पर लगे लाउड स्पीकर से लगातार कहा जा रहा है कि जब तक राम मंदिर निर्माण पूरा नहीं होता तब तक कारसेवक यहीं रहेंगे।

यहां विवादित ढांचे को ध्वस्त किए जाने को हिन्दू समाज की जीत बतायी जा रही है और भाजपा को छोड़ कर शेष राजनीतिक दलों की कड़ी आलोचना की जा रही है।

मलबे में देव प्रतिमाओं समेत पुरातात्विक अवशेष मिले

—गोपाल शर्मा—

अयोध्या, 9 दिसम्बर। विवादित ढांचे के मलबे से प्राचीन हिन्दू मंदिर के शताधिक पुरातात्विक अवशेष निकले हैं जिनमें देव प्रतिमाएं तक शामिल हैं।

ये सभी पुरातात्विक हिन्दू स्थापत्य शैली के अवशेष रामजन्म भूमि परिसर के बाहर रामकथा कुंज में रखे हुए हैं जिनको देखने के लिए केन्द्रीय रिजर्व पुलिस के जवान भीड़ लगाये रहते हैं। इसके अतिरिक्त नवनिर्मित रामलला मंडप के चारों ओर ऐसे पुरातात्विक साक्ष्य बिखरे हैं जो विवादित ढांचे के अन्दर से निकले हैं। इनमें प्रमुख लाखेरी ईंटें [जिन ईंटों का फर्श जन्मभूमि में चारों ओर मिला है और जिसे पुरातत्ववेत्ताओं ने विवादित ढांचे से पुराना माना] और हिन्दू शैली के गढ़े हुए पत्थर हैं। लाखेरी ईंटें इस समय बनने वाली ईंटों से आधी मोटाई की हैं तथा अधिक पक्की हैं।

विवादित ढांचे के मलबे से प्राचीन सिक्के, धातु के बर्तन, हड्डियां और पत्थर की अनेक मूर्तियां निकली हैं। सर्वाधिक महत्वपूर्ण भगवान राम की 3 फुट ऊंची काली प्रतिमा और उसी तरह के कौए [जिसे कागमुसुन्दि कहा जा रहा है] का मिलना है। रामलला के मुख्य पुजारी सत्येन्द्रदास, परमहंस रामचंद्रदास तथा एकाधिक प्रत्यक्षदर्शी इन्हें भूमि से निकलना बताते हैं। लेकिन एक- दो व्यक्तियों ने यह भी बताया कि यह वहीं विवादित ढांचे के पास राम चबूतरे के अंदर स्थापित थी। इसलिए इस सम्बन्ध में पुरातत्ववेत्ता ही निष्कर्ष निकाल सकते हैं। इनके अलावा, ऐसे शताधिक साक्ष्य वहां प्रत्यक्ष पड़े दिखाई देते हैं जिनको देखने से लगता है कि ये विवादित ढांचे के निर्माण से पहले के हैं। दो शिलालेख भी निकले हैं जिन पर संस्कृत से मिलती-जुलती लिपि में कुछ लिखा हुआ है। 'नमः' 'स्तुति' वगैरह साफ पढ़ने में आया। एक शिव की प्राचीन प्रतिमा का सिर निकला है जिस पर जटाएं स्पष्ट परिलक्षित होती हैं। ऐसे स्तम्भ निकले हैं जिन पर स्वास्तिक के अलावा भगवान विष्णु के शंख, चक्र, गदा, पद्म उत्कीर्ण हैं। एक ऐसा स्तम्भ निकला है जिस पर हनुमान पहाड़ उठाये हुए उत्कीर्ण हैं।

एक मटके के नीचे का इतना बड़ा हिस्सा मिला है जो पूरा हो तो उसमें 50 लीटर पानी आ जाए। यह पुरातात्विक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण दिखता है तथा लगता है कि कहीं यह यहां की सबसे प्राचीन सभ्यता का निशान न हो। धातु के तांबे जैसे [काले पड़े हुए] कुछ पात्र निकले हैं जिनमें कटोरे के आकार का एक ऐसा मुड़ा- तुड़ा बर्तन भी है जिसके किनारे कमल की पंखुड़ियों की तरह कटे हुए हैं। पत्थर के आमलक निकले हैं जो प्राचीन मंदिरों के शिखरों पर चंद्राकार हुआ करते थे। जो शिलालेख मिले हैं उनमें एक चौकोर और दूसरा गोलाकार है। चौकोर शिलालेख बीच में टूटा हुआ है तथा दोनों टुकड़े वहीं पास में पड़े हैं।

एक स्तम्भ में दशावतार की झांकी है तथा कलश और पुष्प बने हैं। एक अन्य स्तम्भ के टुकड़े में चौकोर खांचा खींचकर मूर्तियां और शुभचिन्ह उत्कीर्ण हैं। नवनिर्मित मंडप के सामने रामजन्म भूमि

अयोध्या में विवादित ढांचे के मलबे से निकले प्राचीन मंदिर के अवशेष। पत्रिका फोटो

स्थान के पहले से लगे हुए पत्थर के पास एक लोहे का पाइप निकला है जो अब भी अंदर गड़ा हुआ है। जानकारी करने पर पता चला कि वहां पहले दीवार थी।

विवादित ढांचे का मलबा देखने से ही पता चलता है कि इसका निर्माण कई बार में हुआ होगा। खास बात यह है कि बहुत- सी ईंटें जो इधर- उधर बिखरी हैं तथा गुम्बद के मोटी परतों के टुकड़ों से जुड़ी हैं उन पर या तो 1922 से लेकर 1929 तक की सन् लिखी हुई है या अंग्रेजी के एम और के अक्षर तथा उसके बीच में चांद बना हुआ है। उन्हीं के आसपास लाखेरी ईंटें भी बिखरी हैं। इन ईंटों के मलबों में ऐसे अनेक प्रस्तर खंड बिखरे पड़े हैं जिनमें हिन्दुओं के शुभचिन्ह अंकित हैं।

कारसेवा से कारसेवा तक

'कारसेवा से कारसेवा तक' का ऐतिहासिक लोकार्पण.. 29 जनवरी, 1993.. अध्यक्ष श्री कर्पूरचंद कुलिश, मुख्य अतिथि श्री लालकृष्ण आडवाणी और गोपाल शर्मा। श्री भैरोंसिंह शेखावत विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।

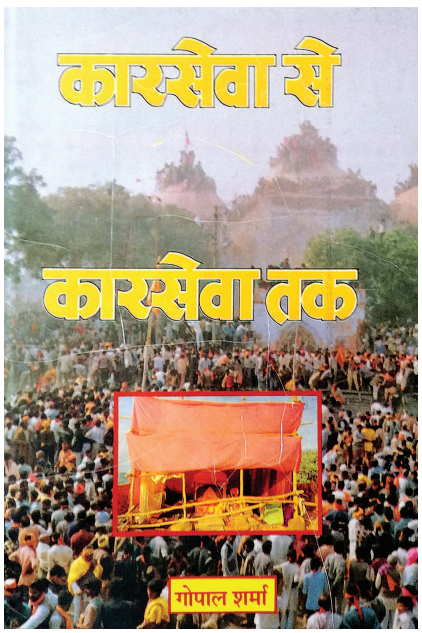

- देश की आजादी के बाद के सबसे बड़े घटनाक्रम अयोध्या आंदोलन की घटनाओं का प्रत्यक्षदर्शी होने और उन्हें जनता तक पहुंचाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।
- गोलियों के बीच, अश्रुगैस के गोले और लाठीचार्ज के समय, भगदड़ और विवादित ढांचे के ध्वंस के दौरान रिपोर्टिंग करते समय प्रभु ने जीवन बचाया।
- 1990 की पहली कारसेवा के बाद सभी घटनाओं को सम्मिलित करके इतवारी पत्रिका का 'कारसेवा विशेषांक' निकला, तो उसे देखने की धूम मच गई। राजस्थान पत्रिका में वह विशेषांक एक सप्ताह तक प्रकाशित होता रहा। श्री रज्जू भैया, श्री अशोक सिंघल सहित राष्ट्रीय–अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विशेषांक को पसंद किया गया।
- बाबरी ढांचे के ध्वंस के बाद आंदोलन के सभी पहलुओं पर केंद्रित पुस्तक 'कारसेवा से कारसेवा तक' का लोकार्पण भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष श्री लालकृष्ण आडवाणी ने किया। तीन महीनों में पुस्तक की रिकॉर्ड बिक्री 20,000 हुई।
- विवादित ढांचे के ध्वंस के दौरान की गई रिपोर्टिंग से राजस्थान पत्रिका की प्रसार संख्या 7 दिन में 25 प्रतिशत बढ़ गई।
- रामशिला पूजन और धन एकत्रीकरण में राजस्थान पहले स्थान पर रहा।
- विवादित ढांचा ध्वस्त होने के बाद बर्खास्त की गई भाजपा सरकारों में से सिर्फ राजस्थान में भाजपा की सत्ता में वापसी हुई।

इतिहास निर्माण में स्मरणीय कार्य

लालकृष्ण आडवाणी

मुझे प्रसन्नता होगी यदि गोपाल शर्मा का ऐतिहासिक पुस्तक लिखने का प्रथम प्रयास अयोध्या प्रकरण पर और लेखकों को भी प्रेरित करे। हम लोग जो इसमें इतनी ताकत लगा रहे हैं, वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में हों, विश्व हिन्दू परिषद में हों, भारतीय जनता पार्टी में हों... हम मानते हैं कि संघ परिवार अयोध्या आंदोलन के माध्यम से इतिहास रच रहा है। गोपाल शर्मा ने 'कारसेवा से कारसेवा तक' पुस्तक लिखकर ऐतिहासिक कार्य किया है। इसे सदैव स्मरण रखा जाएगा।

पत्रकार कर्म का पूर्ण निर्वाह

भैरोंसिंह शेखावत

अयोध्या से जुड़े सांस्कृतिक विषय को लेखनी से समाज तक पहुंचाने का श्री गणेश गोपाल शर्मा ने किया है, इसके लिए वे बधाई के पात्र हैं। मुझे मालूम है जब रथयात्रा शुरू हुई तो कर्पूरचंद कुलिश ने गोपाल शर्मा को इस काम में लगाया। पत्रिका पढ़ने के बाद लोगों को लग रहा था कि वे रथयात्रा के साथ चल रहे हैं, जहां लाठीचार्ज हो रहा है वहां उपस्थित हैं, जहां ढांचा टूटा वहां भी उपस्थित हैं... इस प्रकार की उपस्थिति को अपनी लेखनी से प्रकट करवा देना ही पत्रकार का काम है।

जान की बाजी लगाकर असाधारण भूमिका

कर्पूरचंद कुलिश

यह एक ऐसी पुस्तक है, जिसमें इतिहास की एक महत्वपूर्ण घटना का प्रत्यक्षदर्शी वर्णन है। यह पुस्तक साधारण पुस्तक नहीं है। 'कारसेवा से कारसेवा तक' का प्रसंग देश के इतिहास में नया मोड़ ला देने वाला है। एक ऐसी घटना जो सदियों के बाद इतिहास में और इस देश में घटित हुई, उसका आंखों देखा प्रामाणिक वर्णन इस पुस्तक में दिया हुआ है। श्री आडवाणी जब रथयात्रा पर निकले तो मैंने गोपाल शर्मा से कहा कि यदि तैयारी हो तो इस यात्रा में सम्मिलित हो जाओ और उसका विवरण यहां भेजते रहो.. यह पाठकों को प्रसन्न करेगा, सामयिक सूचना देगा और दैनिक घटनाओं से अवगत रखेगा। गोपाल शर्मा चले गए। तब से लेकर अयोध्या के प्रसंग में जो कुछ घटित हुआ और जब–जब घटित हुआ, ये सदैव वहां मौकों पर मौजूद रहे। ऐसे प्रसंग भी आए जब पिछली कारसेवा के समय गोलियां चल रही थीं, छतों पर से पुलिस के सिपाही गोलियां दाग रहे थे और ये हाथ ऊंचा करके बीच में खड़े हुए थे। हो सकता था कि एक गोली इनको लग जाती, लेकिन ये भागने की कोशिश किए बिना घटना देखते रहे और भेजते रहे।

वहां मंदिर था

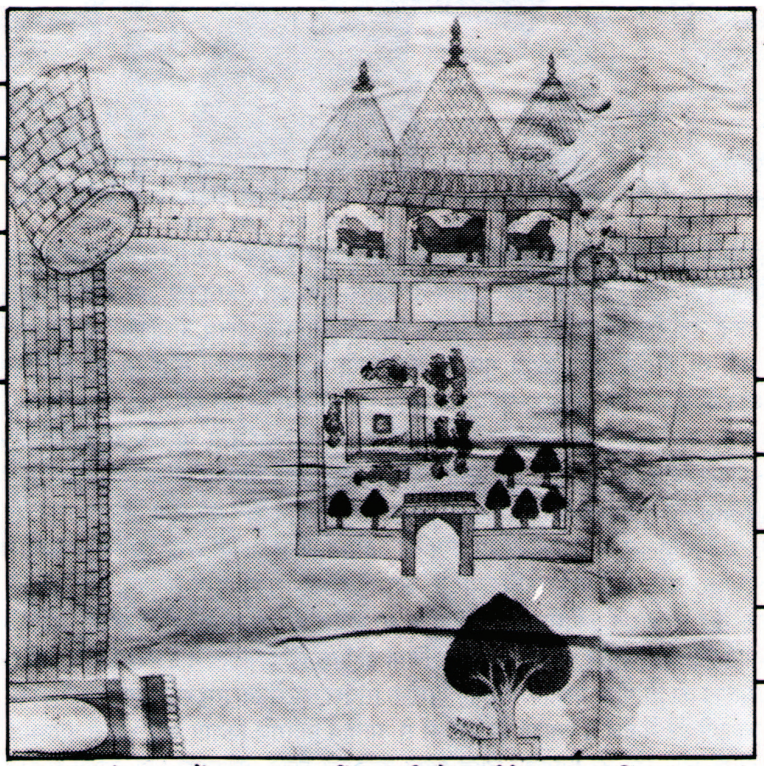

कपड़द्वारा संग्रहालय में रखा अठारहवीं शताब्दी के पूर्वार्ध का जन्मभूमि का नक्शा

श्री रामचंद्र, जिन्हें हिन्दू भगवान विष्णु का अवतार मानते हैं, देवता के रूप में अयोध्या में विराजमान थे इसका उल्लेख **अथर्ववेद** [10/2/31-32-33] में है:

अष्टाचक्रा नवद्वारा देवानां पूरयोध्या।
तस्यां हिरण्ययः कोशः स्वर्गो ज्योतिषाऽऽवृतः।।

डॉ. मुरली मनोहर जोशी
संसद सदस्य (राज्यसभा)

अध्यक्ष
भारतीय जनता पार्टी
Bharatiya Janata Party

17 फरवरी, 1993

प्रिय भाई गोपाल जी,

"कारसेवा से कारसेवा तक" पुस्तक का आद्योपांत पठन करने के पश्चात् राम जन्मभूमि आन्दोलन के सभी चित्र सजीव हो उठे ।

पुस्तक एक ऐतिहासिक दस्तावेज है जो सभी पाठकों को अयोध्या आन्दोलन की वस्तुस्थिति से अवगत कराती है तथा सभी घटनाओं की सिलसिलेवार व्याख्या भी करती है ।

इतिहास लेखकों के लिए यह एक अमूल्य ग्रन्थ सिद्ध होगा और कारसेवकों के लिए तो एक चिरस्मरणीय स्मृति चिन्ह ।

कृपया इस उत्तम कृति के लिए मेरी बधाई एवं अभिनन्दन स्वीकारें । श्रीराम आपको यश दें और सत्य पथ पर इसी भाँति आप पत्रकारिता के उच्चतम शिखरों तक जा पहुँचे । आपने मुझे इस पुस्तक के पढ़ने का अवसर दिया, इसके लिए आभारी हूँ ।

स्नेही,

(मुरली मनोहर जोशी)

राज्यपाल, पश्चिम बंगाल
Governor of West Bengal

14.11.2019

Dear Shri Gopal Sharma ji,

I am extremely thankful to you for sending me a book ably authored by you, 'Kar Seva Se Kar Seva Tak'.

I personally know your keen association with the issue and the efforts you have made all through for it.

I am sure the recent developments for a man of your commitment and direction would be extremely satisfying as a consequence of the historic judgment of the Hon'ble Supreme Court unanimously.

The way forward for Shri Ram Temple at Ayodhya has now been firmly indicated. I once again take due note of your emotive connect and professional contribution for this issue and cause.

With profound regards,

Yours sincerely,

Jagdeep Dhankhar

Jagdeep Dhankhar

कल्याण सिंह और 'कारसेवा से कारसेवा तक'

जयपुर स्थित राजभवन में पुरानी यादों में खोए राज्यपाल श्री कल्याण सिंह। श्री कल्याण सिंह कहीं दौरे पर जाते तो उनकी ब्रीफकेस में 'कारसेवा से कारसेवा तक' पुस्तक जरूर रहती। वे राजस्थान के राज्यपाल का कार्यकाल पूरा करके लौटे तो भी यह साथ लेकर गए। (राज्यपाल के प्रेस अधिकारी डॉ. लोकेशचंद्र शर्मा के संस्मरण)

जयपुर, रविवार
10 नवम्बर, 2019
मूल्य : 2 रुपए
पृष्ठ : 12
वर्ष : 22 अंक : 346

जयपुर
महानगर टाइम्स
मिशन पत्रकारिता का प्रहरी

» न्यास को जन्म स्थान » ट्रस्ट बनाएगा मंदिर » मस्जिद के लिए 5 एकड़ जमीन

रामजी की अयोध्या

भारत की विजय

गोपाल शर्मा

सुप्रीम कोर्ट.. देश की जनता का अभिनंदन!!

यह वह खुशनुमा घड़ी है, जो किसी देश में सदियों में यदा-कदा आया करती है। इससे और इसके बाद देश में शांति से यह साबित हो गया कि 135 करोड़ नागरिकों वाला भारत ऐतिहासिक फैसले करने और शांति से उसे लागू करने की क्षमता रखता है। यह भी कि भारत में देशहित के लिए हिन्दू-मुसलमान साथ मिलकर खड़े हो सकते हैं। 1857 के प्रथम स्वातंत्र्य समर में हिन्दू-मुसलमानों ने मिलकर ब्रिटिश हुकूमत को चुनौती दी थी; सुप्रीम कोर्ट के फैसले के बाद के दृश्य ने वही याद दोहरा दी है। यह एक नई शुरुआत है.. इसकी इबारत राष्ट्रीयता की स्याही से लिखी हुई है और इसके अक्षर स्वर्णिम आभा लिए हुए हैं। यह भारत की विजय है और साथ ही लोकतांत्रिक परिपक्वता, न्यायिक प्रखरता और सुदृढ़ प्रशासन क्षमता का जयघोष है।

आखिर 500 साल बाद मुगल आक्रमण के नृशंस कांड को आजाद भारत में खारिज कर दिया गया। यह आस्था और विश्वास के साथ राष्ट्रीय अस्मिता और गौरवशाली परंपरा का वैश्विक निनाद है। धार्मिक मान्यताओं, पुरालेखन, पुरातात्विक सर्वेक्षण और विभिन्न तत्कालीन साक्ष्यों में साबित हो गया था कि जहां विवादित ढांचा खड़ा था, वहां पहले मंदिर से मिलते-जुलते प्रमाण मौजूद थे। एक शिलालेख में तो एक हजार साल पहले मंदिर होने का स्पष्ट उल्लेख था। समकालीन यात्रियों ने वहां मंदिर के खंडहर होने का उल्लेख किया था। जयपुर के कपड़द्वारा संग्रहालय में जो 1717 का चकनामा मिला, उसके अनुसार सवाई जयसिंह को अयोध्या में बाग और पुरा निर्माण के लिए 983 एकड़ भूमि दी गई थी। इसी संग्रहालय में अयोध्या का तत्कालीन नक्शा मौजूद है, जो 213 सेमी लंबा और 178 सेमी चौड़ा है। संग्रहालय में रखे सूती कपड़े पर बने नक्शे में साफ तौर पर रामजन्मस्थान की स्थिति किले के किनारे दिखाई गई है। नक्शे में निर्मित इमारत के मुकाबले खुला स्थान अधिक है एवं इसके एक तरफ एक चबूतरा है, जिसे जन्मस्थान के रूप में दिखाया गया है। मुख्य भवन को तीन भागों में बांटा हुआ है। प्रत्येक में एक चौकी-मसनद है। मुख्य भवन के तीन शिखर हैं, जो मंदिर के आकार के हैं। विवादित ढांचा ध्वस्त होने के पहले भी तीन गुम्बदों वाला ढांचा बना हुआ था। सारा देश मानता था कि वह रामजन्मभूमि है; सारे देश से लाखों श्रद्धालु हर वर्ष जुटते थे लेकिन फिर भी एक अनावश्यक विवाद बनाया हुआ था।

समकालीन अबुल फजल द्वारा लिखे बाबरनामा में भी बाबर के उस क्षेत्र में जाने और वहां का 'बंदोबस्त' करने का उल्लेख मिलता है। विवादित ढांचे में खुतबा पढ़े जाने वाले स्थान पर एक पद्य लेख लगा था। उसमें लिखा था, 'बाबर शाह की आज्ञा से, जिसके कि न्याय की ध्वजा आकाश पर पहुंची हुई है। नेक दिल मीर बाकी ने फरिश्तों के उतरने के लिए यह स्थान बनाया है, उसकी कृपा सदा बनी रहे। बुवद खैर बाकी।' गणना के अनुसार बुवद खैर बाकी से 935 हिजरी निकलती है, जो 1528 से जुड़ी हुई है। बाबरनामा में बाकी बैग ताशकंदी नामक सरदार का भी जिक्र मिलता है।

इन सबके बावजूद सदियों तक रामजन्मभूमि को बाबरी मस्जिद या विवादित ढांचा बताया जाता रहा। कितने ही बलिदानों के बावजूद इस पर ध्यान नहीं दिया गया। सरकारों ने इसके समाधान में कोई रुचि नहीं दिखाई। 22-23 दिसम्बर, 1949 की रात इसी आक्रोश में रामलला की प्रतिमाएं रखी गईं। तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू-गृहमंत्री वल्लभभाई पटेल के मतभेद और प्रशासकीय हस्तक्षेप के कारण प्रतिमाएं तो नहीं हटाई जा सकीं लेकिन विवाद बना रहा। 6 दिसम्बर, 1992 को वह ढांचा ध्वस्त हुआ तो वह भी सदियों से भरे हुए गुस्से का प्रकटीकरण था। सुप्रीम कोर्ट के इस फैसले से सत्य की जीत हुई और तुष्टिकरण पराजित हो गया।

निश्चित रूप से सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीशों ने इस सर्वसम्मत फैसले का साहस करके हमारी न्यायिक प्रणाली की परिपक्वता पर मुहर लगाई है। आम मुस्लिम समाज का भी अभिनंदन किया जाना चाहिए कि लगभग पांच सौ साल से चली आ रही नाहक जिद से उसने अपने आप को अलग कर लिया। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ सहित हिन्दू संगठनों की भूमिका महत्वपूर्ण है, जिन्होंने पिछले चार दशकों में रामजन्मभूमि की आवाज प्रखर की और भारतीय अस्मिता से जुड़े विषय को जन-जन तक पहुंचा दिया। कांग्रेस की सरकारों ने जाने-अनजाने ताला खोलने, शिलान्यास और विवादित ढांचे के ध्वस्त होते समय सहमति देकर या चुप्पी साधकर राष्ट्रीय भावनाओं को मुखरित होने का मौका दिया। के.के. नायर जैसे कलेक्टर, अशोक सिंघल जैसे नेतृत्वकर्ता, परमहंस रामचंद्र दास जैसे प्रखर महंत और आशीर्वाद देने वाले देवरहा बाबा जैसे विशिष्ट व्यक्तियों के कारण ही 70 सालों तक सत्य प्रखरता से सामने आता रहा। प्रधानमंत्री के रूप में नरेन्द्र मोदी की मौजूदगी ने सामान्य रूप से यह माहौल बनाया कि देश में किसी भी तरह के कड़े फैसले लिए जा सकते हैं और जनता को साथ में रखा जा सकता है। यह बड़ी बात है कि सुप्रीम कोर्ट ने हिन्दू-मुस्लिम न्यायाधीश होते हुए भी सर्वसम्मति से फैसला दिया। उससे बड़ी बात यह कि देश इस फैसले के लिए तैयार था।

सुप्रीम कोर्ट का फैसला आने से पहले ही सारा देश जान रहा था कि रामजन्मभूमि के पक्ष में फैसला आने वाला है क्योंकि न्याय यही है। इसके बावजूद देश की 135 करोड़ जनता ने फैसले का न केवल धैर्यपूर्वक इंतजार किया बल्कि उसका आमतौर पर स्वागत किया। अयोध्या में हिन्दू-मुस्लिम समाज फैसले के पक्ष में साथ-साथ खड़े हैं। यह कहना सही है कि यह किसी की हार नहीं है। कानूनी तौर पर भले कुछ पक्षकारों को खारिज कर दिया गया है लेकिन सत्य के पक्ष में न्याय छीना नहीं गया है। सिर्फ मध्य युग की बर्बरता का शिकार होने के बाद राम जन्मस्थान मंदिर से बाबरी और विवादित बने ढांचे के बर्बर अंत को कानूनी जामा पहनाकर राष्ट्र के जीवित और जागरूक होने का प्रमाण दिया गया है।

पांच सदी बाद ऐतिहासिक न्याय

- विवादित भूमि केंद्र सरकार के पास रहेगी, वह मंदिर निर्माण के लिए उसे ट्रस्ट को सौंपेगी
- मंदिर निर्माण के लिए ट्रस्ट बनाया जाए और इसकी योजना 3 महीने में तैयार की जाए
- निर्मोही अखाड़े का दावा खारिज, ट्रस्ट में उसे प्रतिनिधित्व मिलेगा
- शिया वक्फ बोर्ड का दावा भी खारिज, अयोध्या में 5 एकड़ की जमीन मिलेगी

विशेष संवाददाता

नई दिल्ली। अयोध्या विवाद पर सुप्रीम कोर्ट ने शनिवार को ऐतिहासिक फैसला सुना दिया। पांच जजों की संवैधानिक पीठ ने विवादित जमीन पर रामलला के हक में निर्णय सुनाया। शीर्ष अदालत ने केंद्र और उत्तर प्रदेश सरकार को राम मंदिर बनाने के लिए तीन महीने में ट्रस्ट बनाने के निर्देश दिए हैं। अदालत ने कहा कि 02.77 एकड़ जमीन केंद्र सरकार के अधीन ही रहेगी, साथ ही मुस्लिम पक्ष को नई मस्जिद बनाने के लिए अलग से पांच एकड़ जमीन देने के भी निर्देश हैं। इसके अलावा कोर्ट ने निर्मोही अखाड़े और शिया वक्फ बोर्ड के दावों को खारिज कर दिया है। हालांकि निर्मोही अखाड़े को ट्रस्ट में जगह देने की अनुमति को स्वीकार कर लिया गया है। चीफ जस्टिस ने कहा कि ढहाया गया ढांचा ही भगवान राम का जन्मस्थान है और हिंदुओं की यह आस्था निर्विवादित है। संविधान पीठ द्वारा 45 मिनट तक पढ़े गए 1045 पन्नों के फैसले ने देश के इतिहास के सबसे अहम और एक सदी से ज्यादा पुराने विवाद का अंत कर दिया। चीफ जस्टिस गोगोई, जस्टिस एसए बोबोडे, जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़, जस्टिस अशोक भूषण, जस्टिस एस अब्दुल नजीर की पीठ ने स्पष्ट किया कि मस्जिद को अहम स्थान पर ही बनाया जाए। रामलला विराजमान को दी गई विवादित जमीन का स्वामित्व केंद्र सरकार के रिसीवर के पास रहेगा।

दुनिया ने जाना भारत का लोकतंत्र कितना जीवंत और मजबूत : मोदी

अयोध्या मामले पर सुप्रीम कोर्ट के फैसले के बाद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने देश को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि सर्वोच्च अदालत का ये फैसला हमारे लिए एक नया सवेरा लेकर आया है। इस विवाद का भले ही कई पीढ़ियों पर असर पड़ा हो, लेकिन इस फैसले के बाद हमें ये संकल्प करना होगा कि अब नई पीढ़ी, नए सिरे से न्यू इंडिया के निर्माण में जुटेगी। अब समाज के नाते, हर भारतीय को अपने कर्तव्य, अपने दायित्व को प्राथमिकता देते हुए काम करना है। मोदी ने कहा, सुप्रीम कोर्ट ने एक ऐसे महत्वपूर्ण मामले पर फैसला सुनाया है, जिसके पीछे सैकड़ों वर्षों का दीर्घकालीन इतिहास है। पूरे देश की यह इच्छा थी कि इस मामले की अदालत में हर रोज सुनवाई हो।

ऐतिहासिक निर्णय से सभी पक्ष संतुष्ट

रामलला विराजमान/मंदिर

चीफ जस्टिस रंजन गोगोई ने कहा कि राम जन्मभूमि स्थान न्यायिक व्यक्ति नहीं है, जबकि भगवान राम न्यायिक व्यक्ति हो सकते हैं। ढहाया गया ढांचा ही भगवान राम का जन्मस्थान है, हिंदुओं की यह आस्था निर्विवादित है। विवादित 2.77 एकड़ जमीन रामलला विराजमान को दी जाए। इसका स्वामित्व केंद्र सरकार के रिसीवर के पास रहेगा। 3 महीने के भीतर ट्रस्ट का गठन कर मंदिर निर्माण की योजना बनाई जाए।

सुन्नी वक्फ बोर्ड

अदालत ने कहा कि उत्तर प्रदेश सुन्नी वक्फ बोर्ड विवादित जमीन पर अपना दावा साबित करने में विफल रहा। मस्जिद में इबादत में व्यवधान के बावजूद साक्ष्य यह बताते हैं कि प्रार्थना पूरी तरह से कभी बंद नहीं हुई। मुस्लिमों ने ऐसा कोई साक्ष्य पेश नहीं किया, जो यह दर्शाता हो कि वे 1857 से पहले मस्जिद पर पूरा अधिकार रखते थे।

बाबरी मस्जिद

सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि मीर बाकी ने बाबरी मस्जिद बनवाई। धर्मशास्त्र में प्रवेश करना अदालत के लिए उचित नहीं होगा। बाबरी मस्जिद खाली जमीन पर नहीं बनाई गई थी। मस्जिद के नीचे जो ढांचा था, वह इस्लामिक ढांचा नहीं था।

बाबरी विध्वंस

सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि यह एकदम स्पष्ट है कि 16वीं शताब्दी का तीन गुंबदों वाला ढांचा हिंदू कारसेवकों ने ढहाया था, जो वहां राम मंदिर बनाना चाहते थे। यह ऐसी गलती थी, जिसे सुधारा जाना चाहिए था।

नई मस्जिद

सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि अदालत अगर उन मुस्लिमों के दावे को नजरंदाज कर देती है, जिन्हें मस्जिद के ढांचे से पृथक कर दिया गया तो न्याय की जीत नहीं होगी। इसे कानून के हिसाब से चलने के लिए प्रतिबद्ध धर्मनिरपेक्ष देश में लागू नहीं किया जा सकता। गलती को सुधारने के लिए केंद्र पवित्र अयोध्या की अहम जगह पर मस्जिद के निर्माण के लिए 5 एकड़ जमीन दे।

धर्म और आस्था

सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि अदालत को धर्म और श्रद्धालुओं की आस्था को स्वीकार करना चाहिए। अदालत को संतुलन बनाए रखना चाहिए। हिंदू इस स्थान को भगवान राम का जन्मस्थान मानते हैं। मुस्लिम भी विवादित जगह के बारे में यही कहते हैं। प्राचीन यात्रियों द्वारा लिखी किताबें और प्राचीन ग्रंथ दर्शाते हैं कि अयोध्या भगवान राम की जन्मभूमि रही है। ऐतिहासिक उद्धरणों से संकेत मिलते हैं कि हिंदुओं की आस्था में अयोध्या भगवान राम की जन्मभूमि रही है।

एएसआई की रिपोर्ट

पीठ ने कहा कि मस्जिद के नीचे जो ढांचा था, वह इस्लामिक ढांचा नहीं था। ढहाए गए ढांचे के नीचे एक मंदिर था, इस तथ्य की पुष्टि आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया (एएसआई) कर चुका है। पुरातात्विक प्रमाणों को महज एक ओपिनियन करार दे देना एएसआई का अपमान होगा। हालांकि, एएसआई ने यह तथ्य स्थापित नहीं किया कि मंदिर को गिराकर मस्जिद बनाई गई।

निर्णय के संकेतक

सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि सीता रसोई, राम चबूतरा और भंडार गृह की मौजूदगी इस स्थान की धार्मिक वास्तविकता के सबूत हैं। हालांकि, आस्था और विश्वास के आधार पर मालिकाना हक तय नहीं किया जा सकता है। यह केवल विवाद के निपटारे के संकेतक हैं।

सरकारी रिकॉर्ड

पीठ ने कहा कि विवादित जमीन रेवेन्यू रिकॉर्ड में सरकारी जमीन के तौर पर चिह्नित थी। यह सबूत मिले हैं कि राम चबूतरा और सीता रसोई पर हिंदू 1857 से पहले भी यहां पूजा करते थे, जब यह ब्रिटिश शासित अवध प्रांत था। रिकॉर्ड में दर्ज साक्ष्य बताते हैं कि विवादित जमीन का बाहरी हिस्सा हिंदुओं के अधीन था।

निर्मोही अखाड़ा

संविधान पीठ ने जन्मभूमि के प्रबंधन का अधिकार मांगने की निर्मोही अखाड़ा की याचिका खारिज कर दी। हालांकि, कोर्ट ने केंद्र से कहा कि मंदिर निर्माण के लिए बनने वाले ट्रस्ट में निर्मोही अखाड़े को किसी तरह का प्रतिनिधित्व दिया जाए।

शिया वक्फ बोर्ड

1946 के फैजाबाद कोर्ट के आदेश को चुनौती देती शिया वक्फ बोर्ड की विशेष अनुमति याचिका को सुप्रीम कोर्ट ने खारिज कर दिया। इस याचिका में शिया वक्फ बोर्ड की ओर से विवादित ढांचे पर दावा किया गया था। शीर्ष अदालत ने इसी को खारिज किया है।

जयपुर, गुरुवार
6 अगस्त, 2020
मूल्य : 2 रुपए
पृष्ठ : 8
वर्ष : 23 अंक : 255

जयपुर
महानगर टाइम्स
मिशन पत्रकारिता का प्रहरी

www.mahanagartimes.com
जयपुर, कोटा, दौसा एवं अलवर से एक साथ प्रकाशित

प्रतिष्ठापयामी...जय सियाराम

राम काजु कीन्हे बिनु मोहि कहां विश्राम : प्रधानमंत्री मोदी

अभिजीत मुहूर्त में पीएम मोदी ने 31 साल पुरानी 9 शिलाओं का पूजन किया।

130 करोड़ भारतवासियों के भावार्पण से राममय हुई धर्मनगरी अयोध्या, दुनिया ने देखा सामाजिक समरसता का महासंगम

5 सदी की महाप्रतीक्षा को विराम प्रधानमंत्री मोदी ने श्रीराम जन्मभूमि पर रखी मंदिर की आधारशिला

भूमि पूजन संपन्न, अयोध्या में आस्था का नया सूर्योदय, संपूर्ण भारतवर्ष में राम नाम का जयघोष

विशेष संवाददाता

अयोध्या। धर्मनगरी अयोध्या 130 करोड़ भारतवासियों के भावार्पण से राममय हो गई। यहां उत्सव जैसा माहौल है। जगह-जगह रामलला के गीतों के साथ चरणामृत बांटा गया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अयोध्या में 12 बजकर 44 मिनट 8 सेकंड पर शुभ मुहूर्त में राम मंदिर की नींव रखी। इससे पहले चांदी की 9 शिलाओं का पूजन किया गया। अयोध्या पहुंचकर सबसे पहले उन्होंने हनुमानगढ़ी जाकर दर्शन किए और आरती उतारी। मंदिर के मुख्य पुजारी जीपी महाराज ने उन्हें चांदी का मुकुट और वस्त्र भेंट किए। इसके बाद मोदी ने रामलला के दर्शन किए। वे रामलला के दर्शन करने वाले पहले प्रधानमंत्री बन गए हैं। 492 साल बाद अयोध्या ने अपने इतिहास का पन्ना फिर से पलट दिया है। साल 1528-तब राम मंदिर को ध्वस्त करके यहां बाबरी मस्जिद बना दी गई थी। आजादी के बाद लंबा मुकदमा चला। नौ महीने पहले सुप्रीम कोर्ट ने फैसला सुनाया। विवादित जमीन रामलला की हुई और आज कार्य शुरू हो गया। मंदिर आंदोलन लालकृष्ण आडवाणी ने चलाया था, लेकिन प्रधानमंत्री होने के नाते मंदिर निर्माण की नींव रखने का सौभाग्य नरेंद्र मोदी को मिला। दिन भी अहम है। 5 अगस्त 2019 को कश्मीर से अनुच्छेद 370 हटा था। 5 अगस्त 2020 को मंदिर निर्माण की शुरुआत हुई है। दोनों भाजपा के वादे थे। 5 अगस्त 2021 को क्या होगा, ये इतिहास के गर्भ में छुपा है। शायद मोदी ही कुछ बता पाएं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी बुधवार सुबह यहां पहुंचे। हनुमान गढ़ी में पूजा करने वाले और रामलला के दर्शन करने वाले वे पहले प्रधानमंत्री बन गए। उनसे पहले इंदिरा गांधी, राजीव गांधी और अटल बिहारी वाजपेयी अयोध्या तो आए, लेकिन रामलला के दर्शन नहीं कर पाए थे। मोदी ने 2019 के लोकसभा चुनाव के वक्त फैजाबाद-अंबेडकर नगर में एक रैली को संबोधित किया था, लेकिन अयोध्या नहीं गए थे। श्रीराम जन्मभूमि परिसर में भूमि पूजन के लिए बनाए गए मंच पर सिर्फ 5 लोग प्रधानमंत्री मोदी, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक मोहन भागवत, उत्तर प्रदेश की राज्यपाल आनंदीबेन पटेल, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के अध्यक्ष महंत नृत्य गोपाल दास मौजूद थे। इस तरह रामजन्मभूमि के इतिहास में एक नया पृष्ठ जुड़ गया। अमेरिका की राजधानी न्यूयॉर्क स्थित विश्वविख्यात टाइम्स स्क्वायर पर डिजिटल बोर्ड के जरिए भावी राममंदिर की तस्वीर का प्रदर्शन किया गया। संपूर्ण भारतवर्ष में राम नाम का जयघोष गूंज उठा। वहीं दुनियाभर में सामाजिक समरसता का यह महासंगम देखा गया।

हनुमानगढ़ी में पीएम ने की पूजा, मंदिर परिसर में लगाया पारिजात का दुर्लभ पौधा

अयोध्या में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रामलला के दर्शन किए, उनकी पूजा की। इस दौरान पीएम ने साष्टांग दंडवत प्रणाम कर परिसर में पारिजात का पौधा लगाया। इसके साथ ही अयोध्या में राम मंदिर के भूमि पूजन की प्रक्रिया शुरू हो गई। पीएम मोदी ने अयोध्या पहुंच सबसे पहले हनुमानगढ़ी मंदिर में पूजा की। इस दौरान उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ समेत कई मेहमान भूमि पूजन में मौजूद रहे। इस ऐतिहासिक दिन के लिए पीएम ने पारंपरिक धोती-कुर्ता पहना था।

भूमि पूजन से पहले पीएम मोदी ने राम मंदिर परिसर में पारिजात का पौधा भी लगाया।

वर्ल्ड मीडिया पर भी छाया राममंदिर आयोजन

राम मंदिर शिलान्यास वर्ल्ड मीडिया की सुर्खियों में रहा। अमेरिकी न्यूज साइट सीएनएन ने कहा कोरोना संक्रमण के बाद भी प्रधानमंत्री मोदी ने सतर्कता के साथ मंदिर का भूमि पूजन किया। ब्रिटेन के अखबार द गार्जियन ने लिखा अयोध्या में दिवाली 3 माह पहले ही आ गई है। पाकिस्तान के अखबार द डॉन ने लिखा कि मंदिर का शिलान्यास दरअसल भारत के बदल रहे संविधान का शिलान्यास है। एबीसी न्यूज और बीबीसी ने भी इसे बड़ी उपलब्धि बताया है।

मंदिर की आधारशिला रखने के लिए पट्टिका का अनावरण करते पीएम मोदी, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, संघ प्रमुख मोहन भागवत और महंत नृत्यगोपालदास।

मोदी ने रामलला की मूर्ति के सामने साष्टांग प्रणाम किया। रामलला के दर्शन करने वाले वे पहले प्रधानमंत्री बने।

श्रीराम हमारी संस्कृति के आधार और भारत की मर्यादा हैं: मोदी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अयोध्या में राम मंदिर के भूमि पूजन के बाद 35 मिनट का संबोधन दिया। उन्होंने कहा कि यहां आना स्वाभाविक था, क्योंकि राम काज कीन्हे बिनु मोहि कहां विश्राम। भारत आज भगवान भास्कर के सान्निध्य में सरयू के किनारे एक स्वर्णिम अध्याय रच रहा है। सोमनाथ से काशी विश्वनाथ से, बोधगया से सारनाथ तक, अमृतसर से पटना साहिब तक, लक्षद्वीप से लेह तक आज पूरा भारत राममय है। श्रीराम का मंदिर हमारी संस्कृति का आधुनिक प्रतीक बनेगा, हमारी शाश्वत आस्था का प्रतीक बनेगा, हमारी राष्ट्रीय भावना का प्रतीक बनेगा, और ये मंदिर करोड़ों-करोड़ लोगों की सामूहिक संकल्प शक्ति का भी प्रतीक बनेगा। ये मंदिर आने वाली पीढ़ियों को आस्था, श्रद्धा और संकल्प की प्रेरणा देता रहेगा। इस मंदिर के बनने के बाद अयोध्या की सिर्फ भव्यता ही नहीं बढ़ेगी, इस क्षेत्र का पूरा अर्थतंत्र भी बदल जाएगा। यहां हर क्षेत्र में नए अवसर बनेंगे, हर क्षेत्र में अवसर बढ़ेंगे। सोचिए, पूरी दुनिया से लोग यहां आएंगे, पूरी दुनिया प्रभु राम और माता जानकी का दर्शन करने आएंगी।

पहले प्रभु राम और माता जानकी को याद कर लें। सियावर रामचंद्र की जय, जय श्री राम। आज यह जयघोष सिर्फ सियाराम की नगरी में नहीं सुनाई दे रहा है। इसकी गूंज पूरे विश्वभर में है। सभी देशवासियों को और विश्व में फैले करोड़ों-करोड़ों भारत भक्तों को, रामभक्तों को आज के इस पवित्र अवसर पर कोटि-कोटि बधाई। ये मेरा सौभाग्य है कि राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट ने मुझे बुलाया और इस ऐतिहासिक पल का साक्षी बनने का अवसर दिया। मैं हृदयपूर्वक ट्रस्ट का आभार व्यक्त करता हूं। पूरा देश रोमांचित है, हर मन दीपमय है। आज पूरा भारत भावुक है। सदियों का इंतजार आज समाप्त हो रहा है। करोड़ों लोगों को आज ये विश्वास ही नहीं हो रहा होगा कि वे अपने जीते जी इस पावन दिन को देख पा रहे हैं। बरसों से टैंट के नीचे रहे हमारे रामलला के लिए एक भव्य मंदिर का निर्माण होगा। टूटना और फिर उठ खड़ा होना सदियों से चल रहे इस क्रम से राम जन्मभूमि आज मुक्त हुई है। श्रीराम भारत की मर्यादा हैं, श्रीराम मर्यादा पुरुषोत्तम हैं। इसी आलोक में अयोध्या में राम जन्मभूमि पर श्री राम के भव्य-दिव्य मंदिर के लिए आज भूमि पूजन हुआ है।

भारत को आत्मनिर्भर बनाने का अनुष्ठान पूरा हुआ : भागवत

अयोध्या में राम मंदिर के भूमि पूजन के बाद संघ के सरसंघचालक मोहन भागवत ने उद्बोधन दिया। उन्होंने कहा कि एक संकल्प लिया था। मुझे याद है कि तब के सरसंघचालक बाला साहब देवरस ने कदम बढ़ाने से पहले यह बात याद दिलाई थी कि 20-30 साल लगेंगे। आज हमें इस संकल्प पूर्ति का आनंद मिल रहा है।

बहुत लोगों ने बलिदान दिया है, जो सूक्ष्म रूप से उपस्थित हैं। कुछ ऐसे हैं, जो यहां आ नहीं सकते। आडवाणीजी अपने घर पर बैठे यह कार्यक्रम देख रहे होंगे। सबसे बड़ा आनंद है भारत को आत्मनिर्भर बनाने के लिए जिस विश्वास और आत्मभाव की जरूरत थी, वह अधिष्ठान पूर्ण हो रहा है। जितना हो सके सबको साथ लेकर आगे चलने की विधि एक बनती है, उसका अधिष्ठान बन रहा है। परम वैभव संपन्न और सबका कल्याण करने वाला भारत उसके निर्माण का शुभारंभ आज जिनके हाथ में सबका व्यवस्थागत नेतृत्व है, उनके हाथ से हो रहा है। अशोक सिंघल और रामचंद्र परमहंस होते तो और अच्छा होता। आज आनंद है कि हमें यह करना है। अभी कोरोना का दौर चल रहा है, सारा विश्व विचार कर रहा है कि कहां गलती हुई और कैसे रास्ता निकला। दो रास्तों को देख लिया, तीसरा रास्ता है क्या।

तीसरा रास्ता हमारे पास है? प्रभु श्रीराम के चरित्र से आज तक देखेंगे तो पराक्रम, पुरुषार्थ और वीरत्व हमारे भीतर है। आज के दिन से हमें यह विश्वास और प्रेरणा मिलती है। कोई अपवाद नहीं है, क्योंकि सब राम के हैं और राम सबके हैं। हम सब लोगों को अपने मन की अयोध्या को सजाना है। इस भव्य कार्य के लिए प्रभु श्रीराम जिस धर्म के विग्रह माने जाते हैं, वह सबको जोड़ने वाला, सबकी उन्नति मांगने वाला धर्म है। उसकी ध्वजा को फहराकर हम सबकी उन्नति चाहने वाला भारत बना सकें।

स्वर्णिम इतिहास रचा, हमारे लिए सबसे भावनात्मक दिन: योगी

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने लोगों को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि ये कार्यक्रम केवल मंदिर निर्माण का कार्यक्रम नहीं, बल्कि राम मंदिर का निर्माण राष्ट्र में समरसता की शुरुआत भी करेगा। मुख्यमंत्री योगी ने पूजन में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से शामिल होने वाले सभी लोगों का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्रीजी ने बता दिया कि किस प्रकार से सभी को साथ लेकर समस्याओं का समाधान किया जा सकता है।

मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि हमारा 5 सदियों का संकल्प आज पूरा हुआ है। अगर सभी आंदोलनकारी यहां उपस्थित होते तो बहुत अच्छा और मंगलमय होता। उन्होंने कहा कि पूरी दुनिया संकट में है और भीषण महामारी का दंश झेल रही है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने उत्तरप्रदेश की धरती पर मोहन भागवत, पीएम मोदी और अन्य कई संतों का स्वागत और अभिनंदन किया। योगी आदित्यनाथ ने कहा कि ये हमारा सबसे भावनात्मक दिन है। इस दिन से भारत के नवयुग की शुरुआत होगी। राम मंदिर भूमिपूजन अत्यंत महान अवसर है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि आज के इस कार्यक्रम में जो लोग नहीं आ सके, उन्हें आगे फिर भव्य कार्यक्रम करके राम मंदिर के निर्माण के दौरान ही इसके दर्शन कराए जाएंगे। राम मंदिर के महान आंदोलनकारी पूर्व उपप्रधानमंत्री लालकृष्ण आडवाणी, मुरलीमनोहर जोशी जैसे कई वरिष्ठ लोग कार्यक्रम में शामिल नहीं हो सके।

योगी आदित्यनाथ ने कहा कि अनेक पीढ़ियां चली गईं इस क्षण के इंतजार में। बहुत लंबा संघर्ष चलता रहा और आज पीएम मोदी की कोशिश के कारण यह संभव हो पाया है। मैं हृदय से उनका स्वागत करता हूं।

मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि पांच शताब्दियों बाद राम मंदिर का सपना पूरा हुआ है।

मोदी-योगी के होते हुए मंदिर नहीं बनेगा तो कब बनेगा: नृत्यगोपाल

अयोध्या में राम मंदिर के भूमि पूजन के बाद रामजन्मभूमि न्यास के अध्यक्ष नृत्य गोपाल दास ने कहा कि मंदिर का निर्माण विश्व का निर्माण है, मंदिर का निर्माण लोक जीवन का निर्माण है। मुझसे कई बार पूछा गया कि राम मंदिर का निर्माण कब होगा? मैंने कहा एक ओर मोदी और एक ओर योगी खड़े हैं। अब मंदिर नहीं बनेगा तो कब बनेगा। अब जल्द ही इसका निर्माण होगा। भक्तों की मनोकामना पूरी होगी। अब विलंब नहीं होना चाहिए। मैं प्रधानमंत्रीजी से आग्रह करता हूं कि जल्द से जल्द मंदिर का निर्माण शुरू हो जाए।

यह जनता की इच्छा है शीघ्र अतिशीघ्र मंदिर का निर्माण कार्य प्रारंभ हो जाना चाहिए। हम अपनी आंखों से दिव्य और भव्य मंदिर को देख सकें यही सभी की अभिलाषा है। इस दौरान महंत नृत्य गोपाल दास ने यह भी कहा कि यह बड़ा सुहावना समय है और करोड़ों हिंदू राम भक्तों की इच्छा है कि जल्द से जल्द जहां रामलला विराजमान हों, वहां दिव्य और भव्य मंदिर का निर्माण होना चाहिए। इसलिए तन, मन, धन अर्पण करने के लिए सभी तैयार हैं। मंदिर का निर्माण कार्य प्रारंभ हो जाए। मंदिर का निर्माण होगा और समस्त भक्तों की कामनाओं की पूर्ति होगी। नृत्य गोपाल दास से पहले मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और सरसंघचालक मोहन भागवत ने भाषण दिया। इससे पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने राम मंदिर की आधारशिला रखी।

अयोध्या में दिवाली: अयोध्या में भव्य राम मंदिर के शिलान्यास के बाद हर तरफ दिवाली मनाई गई। पूरी अयोध्या नगरी दीपकों की रोशनी से दमकने लगी। रामभक्तों ने जगह-जगह आतिशबाजी कर और मिठाई बांटकर खुशी जताई।

श्री गोपाल शर्मा के राष्ट्रवादी विचारों
और स्वस्थ पत्रकारिता के सिद्धांतों के प्रति
उनकी प्रतिबद्धता ने मुझे सदैव प्रभावित किया है।
श्री शर्मा एक निर्भीक और आशावादी पत्रकार हैं।

- भैरोंसिंह शेखावत
उपराष्ट्रपति, भारत सरकार
(1 फरवरी, 2007)